धर्मगुरुओं, प्रणाम!

मानोज रखित

यशोधर्मन

कृतिस्वाम्य मानोज रखित पता 8-604 डिस्कवरी, दत्तपाड़ा मार्ग, बोरीवली पूर्व, मुंबई 400 066 दूरभाष 98698 09012 ईमेल maanojrakhit@gmail.com वेबसाइट maanojrakhit.com

कोई भी व्यक्ति इसे छपवा सकते हैं पर कृतिस्वाम्य मेरा ही रहेगा - छपवाने वाले व्यक्ति का एवं छापने वाले मुद्रणालय का नाम व पूरा पता भी यहाँ छापना होगा एवं कम-से-कम 10 प्रतियाँ मुझे छपते ही तुरंत भेजनी होंगी।

अंतर्राष्ट्रीय मानक पुस्तक क्रमांक ISBN-13 978-81-89990-20-6
अथवा ISBN-10 81-89990-20-9

संस्करण जून 2008 प्रतियाँ 1000

अनेक प्रतियाँ देश के अनेक प्रांतों में निःशुल्क बँटती हैं जिन पर काफ़ी खर्च आता है। इस धर्मयज्ञ में आहुति स्वरूप जो भी अर्पण करना चाहें उसे (1) साधारण डाक द्वारा भेज सकते हैं अथवा मनीऑर्डर कर सकते हैं - पता ऊपर दिया हुआ है (2) स्थानीय बैंक में जमा करा सकते हैं - स्टेट बैंक ऑफ़ इण्डिया बचत खाता क्रमांक 00000010416869077 (कुल 17 अंक) अथवा पंजाब नैशनल बैंक बचत खाता क्रमांक 1231000100149604 (कुल 16 अंक)। अधिक संख्या में प्रतियाँ मंगाना चाहें तो 100 प्रतियों के लिए छपाई के 300 रुपये एवं डाक खर्च के 50 रुपये भेज दें।

आइडियल प्रेस, अंबावाड़ी, दहिसर पूर्व 400068 दूरभाष 98920 75431 देवेन्द्र वारंग

वन्दना-त्रयी, देवी-वन्दना एवं समर्पण

वक्रतुण्ड महाकाय सूर्यकोटि समप्रभ। निर्विघ्नं कुरु में देव सर्वकार्येषु सर्वदा।।

(प्रथम पूजा के अधिकारी एवं ज्ञान के देवता श्री गणेश की स्तुति में)

या कुन्देन्दुतुषारहारधवला या शुभ्रवस्त्रावृता, या वीणावरदण्डमण्डितकरा या श्वेतपद्मासना।

या ब्रह्माच्युतशङ्करप्रभृतिभिर् देवैस्सदावन्दिता, सा माम् पातु सरस्वती भगवती निश्शेषजाड्यापहा।।

(कला एवं विद्या की देवी माँ सरस्वती की स्तुति में)

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः गुरुर्देवो महेश्वरः। गुरुस्साक्षात परं ब्रह्म तस्मै श्री गुरवे नमः।।

(गुरुओं के गुरु अंतिम गुरु ब्रह्मा विष्णु महेश की स्तुति में)

या देवी सर्वभूतेषु शक्तिरुपेण संस्थिता। नमस्तस्यै नमस्तसै नमस्तसै नमो नमः।।

(आदि शक्ति माँ दुर्गा की स्तुति में)

कायेन वाचा मनसेन्द्रिऐवा बुध्यात्मना वा प्रकृते स्वभावात,

करोमि यद्यद् सकलं परस्मै नारायणायेति समर्पयामि।।

(श्री नारायण के श्री चरणों में समर्पित यह कृति)

धर्मगुरुओं, प्रणाम!

आप एक महती कार्य में रत हैं। आप हिन्दुओं में हिन्दुत्व की भावना को जिलाये रखे हैं। आपकी इस देन के लिए हिन्दू समाज सदा आपका ऋणी रहेगा।

आपके ज्ञान एवं गुणों के समक्ष मैं एक तुच्छ व्यक्ति हूँ। मेरी धृष्टता को क्षमा कर इस पुस्तक में समाहित तथ्यों पर विचार करें तथा इस संदर्भ में जो भी आपसे बन पड़े वह करें। बस, यही मेरी आपसे प्रार्थना है।

पाठकों, सादर अभिवादन!

पिछले कुछ वर्षों से मेरी दिनचर्या तथा कार्यप्रणाली कुछ ऐसी रही है कि मेरे लिए कहीं आना-जाना अथवा किसी से मिलना सुविधाजनक नहीं हो पाता। अतएव आपसे निवेदन है कि किसी प्रकार का आमंत्रण देने की कृपा न करें अथवा मिलने का आग्रह न करें।

समयाभाव के कारण यथासमय पत्रोत्तर देना संभव नहीं हो पाता फिर भी मेरी चेष्टा यही रहेगी कि समय पर प्राप्ति संवाद दूँ चाहे उत्तर अत्यन्त संक्षिप्त ही क्यों न हो।

आपका प्रेम बना रहे, बस यही कामना है। पुस्तक में यदि कुछ ऐसा कुछ पायें जिसे पढ़ कर आपको लगे कि इसे दूसरों तक पहुँचाना भी उचित होगा तो यथासाध्य चेष्टा करें। मेरी कथनी को केवल संकेत के रूप में स्वीकारें एवं अपना मार्ग स्वयं चुनें। ईश्वर आपका भला करें। सदा ईश्वर में एवं अपने कर्मों के प्रतिफल में विश्वास रखें।

संदर्भ सूची

(1) धर्म ग्रंथ

होली बाइबल, किंग जेम्स वर्ज़न, ब्रॉडमैन ऐंड हॉलमैन पब्लिशर्स, बेलजियम, योरप ISBN 0-8400-3625-4 [1996]

***कुरआन** मजीद* (अरबी-अंग्रेज़ी-हिंदी) मु. मा. पिक्थाल एवं मुहम्मद फ़ारुक खाँ, मक्तबा अल-हसनात ISBN 81-86632-00-X [2003]

कुरआन मजीद, हिंदी अनुवाद हज़रत मौलाना अब्दुल करीम पारेख साहब, एजुकेशनल पब्लिशिंग हाउस, लालकुँआँ दिल्ली [ISBN अनुपलब्ध]

श्रीमद्भगवद्गीता, गीता प्रेस, गोरखपुर [ISBN अनुपलब्ध]

(2) शब्दकोश (अनुवाद के लिए)

अंगरेजी-हिन्दी कोश, फ़ादर कामिल बुल्के, काथलिक प्रेस, राँची [ISBN अनुपलब्ध]

ऑक्सफ़ोर्ड अंग्रेज़ी-हिंदी शब्दकोश ISBN 978-019-564819-5

राजपाल अंग्रेज़ी-हिन्दी शब्दकोश, डॉ हरदेव बाहरी, ISBN 81-7028-100-8

The New Oxford Dictionary of English ISBN 019-565432-3

New Oxford Dictionary for Writers and Editors ISBN 978-019-861040-3

(3) अन्य प्रकाशित पुस्तकें एवं प्रकाशित सी-डी तथा वेब साइट

The Calcutta Qur'an Petition edited by Sita Ram Goel ISBN, 81-85990-58-1 [1999]

Selections from Hindu Scriptures - Manu Smriti, Prof G C Asnani ISBN 81-900400-4-9 [2000]

Chants of India, Pundit Ravi Shankar, Angel Records, 2002, Dr Nandakumara, Sanskrit literature, text and meanings

The Myth of Saint Thomas and the Mylapore Shiva Temple, Ishwar Sharan, ISBN 81-85990-21-2 [1995]

A Hindu View of the World - Essays in the intellectual Kshatriya Tradition, N S Rajaram, ISBN 81-85990-52-2 [1998]

Eminent Historians: Their Technology, Their Line, Their Fraud, Arun Shourie, ISBN 81-900199-8-8 [1998]

हिन्दू जनजागृति समिति http://www.hindujagruti.org/

1- क्या मज़हब नहीं सिखाता आपस में बैर रखना?

बचपन से मैं यही सुनता आया था कि *मज़हब नहीं सिखाता आपस में बैर रखना* और इसे सदा से सच ही मानता आया था। फिर एक दिन ऐसा आया जब *श्रीमद्भगवद्गीता* मुझे खींच कर इटली (2002) ले गई। वहाँ जो कुछ देखा व सुना उसपर सहसा विश्वास न कर सका। जब लौट कर आया तो ईसाई धर्म के उद्भव, इतिहास एवं शिक्षाओं का अध्ययन किया। उसी का एक सिरा थामकर आगे बढ़ते हुए मुझे इस्लाम के उद्भव, इतिहास एवं शिक्षाओं के अध्ययन का भी अवसर मिला। हृदयस्पर्शी जानकारियाँ जो मुझे मिलीं उनमें से एक छोटा-सा हिस्सा आपके समक्ष प्रस्तुत करता हूँ। सत्य को उसके नग्न स्वरूप में आपके सामने ला रहा हूँ, इस बात की आशा किए बिना कि आप उसे आत्मसात कर, जो भी इस परिस्थिति में उचित है, उसे करना चाहेंगे, या फिर उसे अनदेखा कर भुला देना ही बेहतर समझेंगे। कर्म आपका (एवं आपकी आने वाली संतानों का) होगा तथा समय आने पर उसका प्रतिफल भी आपका (एवं आपकी आने वाली संतानों का) ही होगा। मैं अपना कर्म कर रहा हूँ, आप अपने सामाजिक दायित्व के बारे में सोचें।

मूसा का धर्म

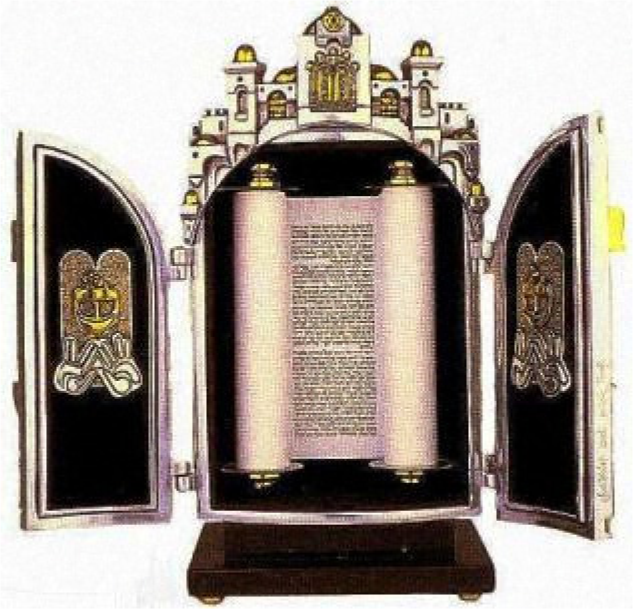

डिउटेरॉनॉमी 12:1 ये हैं **(बाइबिल के) ळॉर्ड (ईश्वर) के विधान (कानून)** जिनका तुम पालन करोगे **तब तक** जब तक तुम इस पृथ्वी पर जिओगे 12:2 तुम पूरी तरह **विनाश** कर दोगे उन सभी स्थानों का जिन पर तुमने अधिकार किया, यदि वहाँ के लोग **किसी भी अन्य भगवान** की पूजा करते हों, चाहे वे ऊँचे पर्वतों पर बसते हों, या पहाड़ियों पर, या फिर हरी-भरी वादियों में 12:3 और तुम उनके पूजा की वेदियों **विध्वंश** कर दोगे, उनके पूजा के स्तम्भों को तोड़ दोगे, उनके उपवनों को जला दोगे, उनके **देवी-देवताओं** के अंकित चित्रों को चीर डालोगे, गढ़ी हुई **मूर्तियों** को काट डालोगे, उनका **नाम तक** वहाँ से **मिटा** डालोगे 13:6 यदि तुम्हारा **सगा भाई** जो है तुम्हारी अपनी माँ का बेटा, या तुम्हारा **पुत्र**, या तुम्हारी **पुत्री**, या तुम्हारी **पत्नी** जो तुम्हारे ह्रदय में बसती हो, या तुम्हारा वह **मित्र** जो तुम्हारी अपनी आत्मा के समान है - इनमें से यदि कोई तुम्हें चुपके से फुसलाए कि चलो हम चल कर दूसरे धर्म के भगवान की पूजा करें जो न तुम्हारे भगवान हैं न तुम्हारे पूर्वजों के 13:8 न तुम अपनी सहमति दोगे, न तुम उसकी बात सुनोगे, न तुम्हारी नज़र में उसके प्रति दया होगी, न तुम उसे क्षमा करोगे, न तुम उसे छुपाओगे 13:9 तुम उसे अवश्य ही **मार डालोगे**, तुम्हारा हाथ वह **पहला हाथ** होगा जो उसे मृत्यु के द्वार तक पहुँचाएगा, उसके पश्चात दूसरे लोगों के हाथ उस पर पड़ेंगे 13:10 और तुम उसे पत्थरों से मारोगे ताकि वह मर जाए क्योंकि उसने तुम्हें तुम्हारे अपने भगवान से दूर ले जाने की चेष्टा की 20:16 उन शहरों को जिनका तुम्हें तुम्हारे भगवान ने उत्तराधिकारी बनाया, उन शहरों के लोगों में से **किसी को भी साँस लेता न छोड़ना** 20:17 उन्हें पूर्णतया नष्ट कर देना 32:24 उन्हें भूख से तड़पाओ और जलती हुई आग की लपटों को निगल जाने दो उनके शरीरों को, उनकी मौत अत्यंत दुःखद हो, मैं भी भेजूँगा जानवरों को जिनके दाँत उनके शरीरों पर गड़ेंगे और साँपों को जिनका विष उन्हें धूल चटाएगा 32:25 बिना तलवार के उनके दिलों में आतंक भर दो, नष्ट कर दो जवाँ मर्दों को, कुमारियों को, **माँ का दूध पीते नन्हे बच्चों** को, और **वृद्धों को जिनके बाल पक चुके हों**।

ईसाइयाह 13:16 **उनकी आँखों के सामने उनके बच्चों** को पूरी शक्ति के साथ उठा कर पटको ताकि उनके टुकड़े-टुकड़े हो जायें, और **उनकी पत्नियों का बलात्कार** करो।

नम्बर्स 31:17 **बच्चों** में प्रत्येक **नर** का कत्ल कर डालो और प्रत्येक उस स्त्री का भी जिसने किसी पुरुष के साथ सहवास किया हो 31:18 पर उन सभी **मादा बच्चों** को जिन्होंने किसी पुरुष के साथ सहवास न किया हो, उन्हें अपने लिए जीवित रखो।

एक्सोडस 23:24 तुम **दूसरों के गॉड** (ईश्वर) के सामने न तो झुकोगे और न उनकी सेवा करोगे, बल्कि उन्हें पूरी तरह से **विध्वंश** कर दोगे, उनकी **मूर्तियों** तोड़-फ़ोड़ कर नष्ट कर दोगे 34:13 तुम उनकी पूजा की वेदियों **ध्वंश** कर दोगे, उनकी **मूर्तियों** को तोड़ दोगे, उनके उपवनों को काट डालोगे 34:14 तुम किसी भी दूसरे भगवान की सेवा न करोगे क्योंकि लॉर्ड, जिसका नाम **ईर्ष्यालु** है, वह एक **ईर्ष्यालु ग़ॉड** हैं।

नाहुम 1:2 लॉर्ड **ईर्ष्यालु** हैं, और लॉर्ड बदला लेते हैं; जब लॉर्ड **बदला** लेते हैं तो

वह क्रोधोन्मत्त हो जाते हैं; लॉर्ड **प्रतिशोध** लेंगे अपने विरोधियों से; वे अपना क्रोध बरसाते हैं अपने **शत्रुओं** पर

ईसा का धर्म

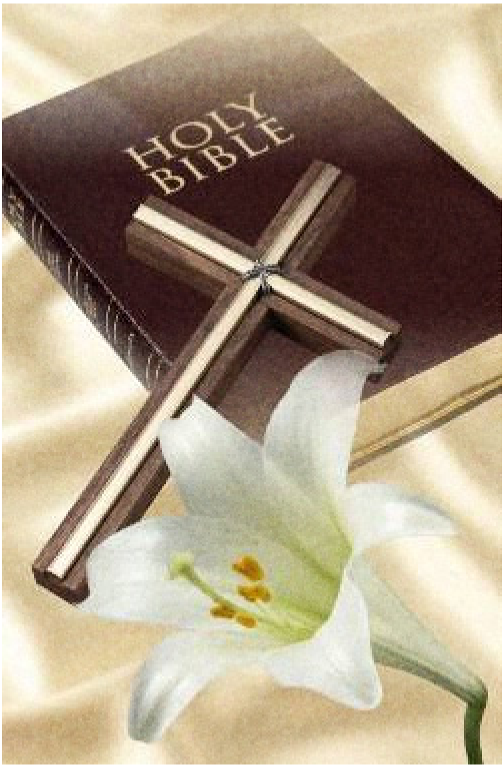

गॉस्पेल कहते हैं **ईसा की जीवनी** एवं उनकी **शिक्षाओं** के संकलन को। सुनिए ईसा की कथनी मैथ्यू की जबानी। **संत** मैथ्यू ईसा मसीह के बारह **मुख्य शिष्यों** में से एक थे और उन्होंने **ईसा से जो सुना** और सीखा उसे गॉस्पेल में **लिपिबद्ध** किया। **संत** ल्यूक बाइबिल में एक गॉस्पेल के लेखक हैं। **संत** थॉमस ईसा मसीह के बारह **मुख्य शिष्यों** में से एक थे और उन्होंने **ईसा से जो सुना** और सीखा उसे अपने गॉस्पेल में **लिपिबद्ध** किया। सुनिए ईसा की कथनी मैथ्यू, ल्यूक तथा थॉमस की जबानी।

मैथ्यू 10:34 **न सोचो कि** मैं आया हूँ विश्व में शांति लाने के लिए - मैं आया हूँ **शांति के लिए नहीं** बल्कि तलवार लिए 10:35 क्योंकि मैं आया हूँ आदमी को अपने

पिता के **विरुद्ध** खड़ा करने के लिए - पुत्री को माता के **विरुद्ध** - बहू को सास के **विरुद्ध** 10:36 - और **मनुष्य का शत्रु** होगा उसका **अपना परिवार** 12:30 वह जो मेरे **साथ नहीं** वह मेरे **विरुद्ध** है।

ल्यूक 12:51 **तुम समझते हो** कि मैं आया हूँ इस धरती को **अमन चैन** देने? मैं तुम्हें बताता हूँ - **नहीं**। मैं आया हूँ **बँटवारा** करने 12:52 क्योंकि **अब से** घर में पाँच **बटे होंगे** - तीन दो के **विरुद्ध** - दो तीन के **विरुद्ध** 12:53 पिता होगा पुत्र के **विरुद्ध** - पुत्र होगा पिता के **विरुद्ध** - माँ होगी पुत्री के **विरुद्ध** - पुत्री होगी माता के **विरुद्ध** - सास होगी बहू के **ख़िलाफ़** - बहू होगी सास के **ख़िलाफ़** 14:26 यदि एक व्यक्ति मेरे पास आता है और वह अपने **पिता** से **घृणा** नहीं करता - एवं **माता** से, **पत्नी** से, **संतानों** से, **भाई-बहनों** से, एवं अपने-आप से भी - तो वह मेरा शिष्य **नहीं** बन सकता।

गॉस्पेल ऑफ थॉमस 16 **ईसा ने कहा** संभवतः **लोग सोचते हैं** कि मैं आया हूँ विश्व में **शांति स्थापना** हेतु - **वे नहीं जानते** कि मैं आया हूँ इस धरती पर **फूट डालने** के लिए - आग, तलवार और **युद्ध फैलाने** के लिए - जहाँ पाँच होंगे एक परिवार में - वहाँ तीन होंगे दो के **विरुद्ध** और दो होंगे तीन के विरुद्ध - पिता होगा पुत्र के **विरुद्ध** और पुत्र पिता के - और वे डटे रहेंगे क्योंकि वे दोनों अपने आप में **अकेले** होंगे 56 जो अपने **पिता** से **घृणा** नहीं करेगा और अपनी **माता** से भी, वह मेरा शिष्य **नहीं** बन सकता। वह जो अपने **भाइओं** एवं **बहनों** से **घृणा** नहीं करेगा, और अपना क्रॉस नहीं ढोएगा जैसा कि मैंने किया है, वह मेरे योग्य न बन पायेगा।

क्या आपको ऐसा लगता है कि पवित्र बाइबिल की शिक्षायें उतनी ही पवित्र हैंजितना उसका नाम? क्या आपको लगता है कि ईसा **वास्तव में** प्रेम के संदेश वाहक थे? क्या आपको प्रेममय दिखता है यह संसार जब से ईसा अवतरित हुए हैं इस धरा पर? कलियुग का नाम लेकर बात को मत टालिए। तनिक गहराई से सोच कर देखिए। **कलियुग** का आरंभ तो पाँच हजार वर्ष पहले हुआ। तब से अब तक के समय को दो हिस्सों में बाँटिए - पहला हिस्सा ईसा के पहले तीन हजार वर्षों का - दूसरा हिस्सा ईसा के बाद के दो हजार वर्षों का। अब दोनों हिस्सों की **तुलना कर** के देखिए। आपको युद्ध, खून-खराबा, आगजनी, समाज में वैमनस्य, परिवार में वैमनस्य, ये सारे दुर्गुण ईसा के पहले के तीन हजार वर्षों में अधिक दिखते हैं **या फिर** ईसा के बाद के दो हजार वर्षों में? इस बात पर भी ध्यान दीजिए कि हिन्दू परिवारों में विघटन एवं वैमनस्य की **बाढ़ कब से** आई? समय को दो हिस्सों में बाँटिए - एक **तब तक** जब तक हमारी प्राचीन हिन्दू शिक्षा पद्धति रही - और **तब से** जब से ईसाई मिशनरियों द्वारा हम अंग्रेज़ी शिक्षा पद्धति के लपेट में आये। फिर सोच कर देखिए - समय के उस प्रथम खण्ड में हमारे हिन्दू परिवारों में विघटन एवं वैमनस्य की प्रक्रिया **किस हद तक रही** एवं समय के उस द्वितीय खण्ड में हमारे हिन्दू परिवारों में विघटन एवं वैमनस्य की प्रक्रिया **किस हद तक पनपी व फैली।**

तत्पश्चात सोच कर देखिए, ईसा ने इस धरा पर अपने अवतरण के जो **निहित उद्देश्य** अपने बारह मुख्य शिष्यों को बताये थे - वे शिष्य जो **सदा उनके साथ** रहते थे - तथा

उन शिष्यों ने बाइबिल में जो कुछ दर्ज किया था, जो आज भी **प्रमाणित दस्तावेज़** के रूप में उपलब्ध हैं, एवं जिन्हें **वैटिकन के पोप** की आधिकारिक **मान्यता प्राप्त** है - ईसा के उन निहित उद्देश्यों की **तुलना कीजिए** उन सब घटनाओं के साथ जो होती रही हैं ईसा के पश्चात इन दो हजार वर्षों में, और **तभी किसी निष्कर्ष** पर पहुँचे। अब तक आप जो कुछ सुनते, पढ़ते आये हैं उन्हें अपनी सोच पर **हावी होने न** दीजिए। सारी चीज को एक बार **पुनः नए सिरे से** सोचने की चेष्टा कीजिए। ध्यान रखें कि **सत्य हमेशा धुंध के पीछे छुपा** होता है। सत्य की परख के लिए उस नज़र की ज़रूरत होती है जो उस **धुंध को भेद सके।**

मुहम्मद का धर्म

कुर'आन सूरा 2 **अल'बकरा** आयत 193 **तब तक** उनसे लड़ते रहो, जब तक **मूर्ति पूजा** बिल्कुल खत्म न हो जाये और अल्लाह का मज़हब **सब पर** राज करे आयत 216 लड़ना तुम्हारी मजबूरी है, चाहे तुम **कितना भी** नापसंद करो इसे।

कुर'आन सूरा 4 **अन'निसा** आयत 91 वे जो पीठ मोड़ लें, उन्हें पकड़ो जहाँ भी उन्हें पाओ, और उन्हें हिंसा पूर्वक कत्ल कर डालो आयत 56 वे जो अल्लाह के आदेश को नहीं मानते हैं, हम उन्हें आग में झोंक देंगे और जब उनकी चमड़ी पिघल जाए तो हम उनकी जगह नई चमड़ियाँ डाल देंगे ताकि उन्हें स्वाद मिले **यंत्रणा** का। अल्लाह सबसे अधिक शक्तिमान हैं एवं विवेक पूर्ण हैं।

कुर'आन सूरा 8 **अल'अन्फ़ाल** आयत 12 **जो मेरे अनुयायी नहीं हैं**, मैं उनके हृदयों में आतंक भर दूँगा। उनके सर धड़ से अलग कर दो, उनके हाथ और पाँव को इस कदर जखमी कर दो कि वे किसी भी काम के **लायक न रह** जायें आयत

15 से 18 तक वो तुम नहीं, बल्कि अल्लाह था, **जिसने हिंसापूर्ण** ढंग से उन्हें मार डाला। वह तुम नहीं थे जिसने उन पर दृढ़ता पूर्वक प्रहार किया। अल्लाह ने उन पर दृढ़ता पूर्वक प्रहार किया ताकि वह तुम जैसे अनुयायी को भरपूर पुरस्कार दे सके आयत 39 तब तक उन पर हमला करते रहो जब तक **मूर्ति पूजा** का नामों निशाँ न मिट जाये और सब **अल्लाह के मज़हब** के अधीन न हो जायें। आयत 67 पैगंबर, युद्ध बंदी **तब तक न बनायेगा**, जब तक वह, उस जमीन पर **कत्लेआम** न कर ले।

कुर'आन सूरा 9 **अत'तौबा** आयत 2-3 अल्लाह एवं उनके पैगंबर मुक्त हैं, किसी भी दायित्व से, **मूर्ति पूजकों** के प्रति... उन्हें ऐसी सजा दो कि वे शोक ग्रस्त हो जायें आयत 5 जब हराम महीने बीत जायें तो **मूर्तिपूजकों** को कत्ल कर डालो **जहाँ भी पाओ** उन्हें। **छिप कर** घात लगाये बैठे रहो उन पर आक्रमण करने के लिए। उन्हें घेर लो और बन्दी बना लो। यदि उन्हें **मूर्तिपूजक** होने का पछतावा हो और वे **इस्लाम कबूल** कर लें, **नमाज़ पढ़ें**, **ज़कात** (कर) दें तब उनका मार्ग छोड़ दो। अल्लाह ने उन्हें क्षमा किया और उन पर दया की आयत 7 अल्लाह और उनके पैगंबर **मूर्ति पूजकों** को विश्वास की दृष्टि से नहीं देखते आयत 39 ऐ मुसलमानों, अगर तुम **युद्ध न करो** तो अल्लाह तुम्हें कड़ी सजा देगा और तुम्हारी जगह पर दूसरे आदमी को लायेगा आयत 41 चाहे तुम्हारे पास हथियार हों या न हो, चल पड़ो, और लड़ो **अल्लाह की खातिर**, अपने धन और अपने शरीर के साथ आयत 73 ओ पैगंबर! **जो मुझमें** विश्वास नहीं करते, उनसे युद्ध छेड़ो। उन पर कठोर बनो। उनका अंतिम ठिकाना नरक है, एक दुर्भाग्य पूर्ण यात्रा का अंतिम चरण आयत 123 मुसलमानों, तुम्हारे **आस-पास** जो भी गैर-मुसलमान बसते हैं, हमला बोल दो उन पर, उन्हें जताओ कि तुम कितने कठोर हो।

कुर'आन सूरा 22 **अल'हज़्ज़** आयत 19-22 आग के परिधान (वस्त्र) बनाये गए हैं उनके लिए **जो इस्लाम को नहीं अपनाते**। उबलता हुआ पानी उनके सर पर डाला जायेगा ताकि उनकी चमड़ी भी पिघल जाए और वह सब भी पिघल जाए जो उनके पेट में है (अँतड़ियाँ भी)। उन पर कोड़े बरसाये जाएँ, आग में तपते हुए लाल लोहे के बने कोड़ों से।

कुर'आन सूरा 33 **अल'अहज़ाब** आयत 36 जब अल्लाह एवं उसके पैगंबर ने निर्णय कर लिया है, किसी भी बात पर, तो किसी **मुसलमान** मर्द या औरत को **यह हक नहीं** कि वह उस बारे में, **कुछ भी** कह सके।

कुर'आन सूरा 47 **मुहम्मद** आयत 4 से 15 तक जब तुम्हारा सामना हो गैर-मुसलमानों से, युद्धभूमि पर, उनके सर काट डालो। जब तुम उन्हें कुचल डालो तो कस कर बाँधो। उनसे धन वसूल करो। उनके हथियार डलवा दो। तुम ऐसा ही करोगे। यदि अल्लाह ने चाहा होता तो वह स्वयं उन्हें नष्ट कर देता, तुम्हारी सहायता के बिना। पर उसने यह आदेश दिया है, ताकि वह **तुम्हारी परीक्षा** ले सके। और वे जो **अल्लाह के लिए** लड़ते हुए कट मरेंगे, अल्लाह उनके काम को व्यर्थ न जाने देगा। वह उन्हें जन्नत में बुला लेगा। अल्लाह का वचन है यह। मुसलमानों, यदि तुम अल्लाह की सहायता करते हो, तो अल्लाह तुम्हारी सहायता करेगा, और तुम्हें मज़बूत बनायेगा। पर जो अल्लाह का न होगा वह **अनन्त काल तक** नरक में सड़ेगा। अल्लाह **केवल मुसलमानों** की ही रक्षा करेगा। गैर-मुसलमानों का कोई भी

रखवाला नहीं। जो सच्चे धर्म (इस्लाम) को अपनायेंगे उन्हें अल्लाह जन्नत में दाखिल करेगा। **जो मुसलमान नहीं बनेंगे**, वे वही खायेंगे जो जानवर खाते हैं, नर्क उनका घर होगा... वे वहाँ अनन्त काल तक रहेंगे, और खौलता हुआ पानी पिएँगे जो उनकी अँतड़ियों को चीर देगा।

कुर'आन सूरा 48 **अल'फ़तह** आयत 29 मुहम्मद अल्लाह के पैगंबर हैं। जो उनका अनुसरण करते हैं वे गैर-मुसलमानों के प्रति **बेरहम** होते हैं पर एक दूसरे (मुसलमानों) के प्रति **कृपालु** होते हैं।

कुर'आन सूरा 60 **अल'मुम्तहना** आयत 4 **शत्रुता** एवं **घृणा** ही रहेगी हमारे बीच **तब तक** जब तक तुम **केवल** अल्लाह के बंदे न बन जाओ।

कुर'आन सूरा 66 **अत'तहरीम** आयत 9 ओ पैगंबर! **जो मुझमें** (अल्लाह में) विश्वास नहीं करते, उन पर हमला करो और उनके साथ कठोरता से पेश आओ। नर्क उनका निवास होगा, दुर्भाग्य पूर्ण उनका भाग्य होगा।

कुर'आन सूरा 69 **अल'हक्का** आयत 30-33 - उसे पकड़ो और उसे बाँधो। जलाओ उसको नर्क की आग में और उसके बाद बाँधो उसे एक जंजीर से, जो हो सत्तर क्युबिट लंबा, क्योंकि **उसने अल्लाह को नहीं स्वीकारा**, जो हैं सबसे ऊपर।

हिन्दू धर्म

भगवद्गीता अध्याय 9 श्लोक 29 मैं सब भूतों में समभाव से व्यापक हूँ, **न कोई** मेरा **अप्रिय** है और **न प्रिय** है; परन्तु जो भक्त मुझको प्रेमसे भजते हैं, वे मुझमें हैं और मैं भी उनमें प्रत्यक्ष प्रकट हूँ।

ऋग्वेद 1-164-46 ब्रह्माण्डीय सत्य **एक** है परन्तु प्रज्ञावान उसे **भिन्न-भिन्न** ढंग से अनुभव करते हैं - जैसे इंद्र, मित्र, वरुण, अग्नि, शक्तिशाली गरुत्मत, यम एवं मतरिस्वन।

शिवमहिम्ना स्तोत्र 3 जिस प्रकार से अनगिनत नदियाँ **भिन्न-भिन्न मार्गों** से, सीधे या टेढ़े-मेढ़े रास्तों से, बहती हुई **अंत में** जाकर उसी सागर से मिलती हैं, उसी प्रकार सभी इच्छुक तुम (ईश्वर) तक जा पहुँचते हैं, अपनी-अपनी **चेष्टाओं** के द्वारा, अपनी-अपनी **रुचि** और **योग्यता** के अनुसार।

तैत्रीय उपनिशद ब्रह्मवल्लि एवं भृगुवल्लि, शांति मंत्र - ईश्वर **हम सभी** की रक्षा करें। ईश्वर **हम सभी** का पोषण करें। हम सभी साथ काम करें, **एक होकर** मानवता की भलाई के लिए। हमारा ज्ञान ज्योतिर्मय हो एवं **अर्थपूर्ण** हो। हममें एक-दूसरे के प्रति **घृणा न** हो। **चारों तरफ** शांति हो, **सम्पूर्ण शांति** हो।

तैत्रीय अरण्यक चतुर्थ प्रश्न, प्रवर्ग्य मंत्र, 42वा अनुवाक - पृथ्वी पर **शांति** हो, आकाश में **शांति** हो, स्वर्ग में **शांति** हो, सभी दिशाओं में **शांति** हो, अग्नि में **शांति** हो, वायु में **शांति** हो, सूर्य में **शांति** हो, चंद्रमा में **शांति** हो, ग्रहों में **शांति** हो, जल में **शांति** हो, पौधों में **शांति** हो, जड़ी-बूटियों में **शांति** हो, पेड़ों में **शांति** हो, गाय-बैलों में **शांति** हो, बकरियों में **शांति** हो, घोड़ों में **शांति** हो, मानवों में **शांति** हो, ब्रह्म में **शांति** हो, उन व्यक्तियों में **शांति** हो जिन्होंने ब्रह्म को पाया हो, **शांति** हो,

केवल **शांति** हो। वह **शांति** मुझमें हो, केवल **शांति**! उस **शांति** के द्वारा अपने-आपमें शांति **स्थायी** कर सकूँ, और सभी द्विपादों में एवं चतुर्पादों में। ईश्वर करें मुझमें शांति हो, **केवल** शांति।

सर्वे शाम - सब का भला हो। **सब के** लिए शांति हो। **सभी** पूर्णता के योग्य हों एवं **सभी** उसकी अनुभूति करें जो शुभ हो। **सभी** आनन्दित हों। **सभी** स्वस्थ हों। **सभी** के जीवन में वह हो जो भला है एवं **कोई भी** कष्ट में न हो।

तैत्रीय उपनिषद शिक्षावल्लि, 10वा अनुवाक **-** देवी-देवताओं एवं पूर्वजों के प्रति **अपने दायित्वों** की अवहेलना न करो। तुम्हारी **माता** तुम्हारे लिए एक देवी स्वरूप हों। तुम्हारे **पिता** तुम्हारे लिए एक देवता स्वरूप हों। तुम्हारे **गुरु** तुम्हारे लिए एक देवता स्वरूप हों। तुम्हारे **अतिथि** तुम्हारे लिए एक देवता स्वरूप हों। जहाँ भी तुम **दोष रहित कर्मों** को किए जाते हुए देखो, **केवल उन्हीं का** अनुसरण करो, अन्य कर्मों का नहीं। हम जो तुम्हारे गुरु हैं, जब तुमने देखा है हमें अच्छे कर्म करते हुए तो **केवल उन्हीं कर्मों का** अनुसरण करो।

बृहद अरण्यक उपनिषद प्रथम अध्याय, तृतीय ब्रह्मणा, 28वा मंत्र **-** हे ईश्वर! कृपया मुझे ले चलो **नश्वर से अनश्वर** की ओर। ले चलो **अज्ञान से ज्ञान** की ओर। ले चलो मुझे **आवागमन** की प्रक्रिया से मुक्त कर **मोक्ष** की ओर। शांति हो, शांति एवं **सम्पूर्ण शांति**।

मनु स्मृति 7-90 जब राजा अपने शत्रु से युद्ध भूमि पर लड़े तो वह किसी ऐसे अस्त्र का प्रयोग **न करे** जो **छुपा** हुआ हो, **कँटीले तारों** से बुना हुआ हो, **विष बुझा** हो, अथवा जिसके फलक से **आग** लपलपा रही हो 7-91 राजा **उस पर** वार **न** करे जो युद्ध भूमि छोड़ कर भाग रहा हो अथवा डर के मारे पेड़ पर चढ़ गया हो। राजा **उस पर** वार **न** करे जो नपुंसक हो, या जिसने विनय पूर्वक दोनों हाथ जोड़ लिए हों, अथवा जो युद्ध भूमि से पलायन कर रहा हो, या जिसने घुटने टेक दिए हों और कहता हो कि मैं तुम्हारी शरण में हूँ 7-92 **न उस पर** जो सो रहा हो, या जिसके कवच खो गए हों, अथवा जो नग्नावस्था में हो, या फिर जिसने हथियार डाल दिए हों, **न उस पर** जो युद्ध में भाग न लेता हुआ केवल एक दर्शक मात्र हो, **न उस पर** जो एक दूसरे शत्रु से युद्ध कर रहा हो 7-93 **न उस पर** जिसके अस्त्र टूट चुके हों, **न उस पर** जो शोक में डूबा हुआ हो, **न उस पर** जो भीषण रूप से घायल हो, **न उस पर** जो आतंकित हो, **न उस पर** जो युद्ध क्षेत्र से भाग रहा हो। राजा के ध्यान में रहे एक **गौरवपूर्ण योद्धा** की आचरण-संहिता।

ISBN 81-89746-15-4 (2006) पर आधारित

2 - हिन्दू धर्म आचार्य सभा

समस्त परंपरागत हिन्दू धर्माचार्यों (उदाहरण के लिए शंकराचार्य, महामण्डलेश्वर, पीठाधीश्वर, इत्यादि) को एकत्र कर हिन्दूधर्म के हितों की रक्षा हेतु जो कुछ आवश्यक हो, उस दिशा में कदम उठाने के लिए हिन्दू धर्म आचार्य सभा की स्थापना हुई थी। इस उद्देश्य की पूर्ति हेतु हिन्दू धर्म आचार्य सभा की दो बैठकें हुईं यहूदी धर्म के प्रमुख रब्बी एवं यहूदी धर्म के उच्चस्तरीय धर्मगुरुओं के साथ। **हिन्दू धर्म आचार्य सभा की दृष्टि में ये बैठकें कितनी महत्वपूर्ण थीं इसका अंदाज़ा आपको नीचे दिए गए दो संकेतों से मिल सकता है।**

संकेत 1 - हिन्दू-यहूदी शीर्षस्थ नेतृत्व की प्रथम बैठक फरवरी 2007 (अर्श विद्या न्यूज़लेटर - मई 2007 - आवरण पृष्ठ -'फ्रंट')

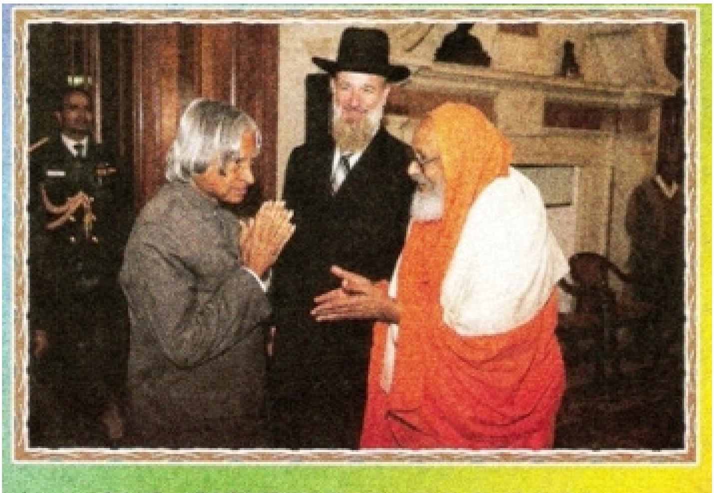

Pujya Swamiji & Chief Rabbi of Israel meeting the President of India after Hindu-Jewish Leadership Summit held in February 2007

आप देख रहे हैं भारत के राष्ट्रपति ए-पी-जे अब्दुल कलाम को, यहूदी धर्म के प्रमुख रब्बी को (काला कोट काली टोपी पहने), तथा हिन्दू धर्म आचार्य सभा के प्रमुख धर्मगुरू को (गेरुए वस्त्र में)। यह थी पहली बैठक - इसके लिए रास्ता तैयार किया जा रहा था काफ़ी समय से। इसके पहले भी - मुंबई के विले पार्ले स्थित सन्यास आश्रम में जब हिन्दू धर्म आचार्य सभा का द्वितीय सम्मेलन हुआ था तब भी - यहूदी धर्म के प्रतिनिधि को "हिन्दू धर्म के आचार्यों की सभा में" भाषण देने के लिए आमंत्रित किया गया था।

संकेत 2 - हिन्दू-यहूदी शीर्षस्थ नेतृत्व की द्वितीय बैठक फरवरी 2008 (अर्श विद्या न्यूज़लेटर - मार्च 2008 - आवरण पृष्ठ - 'बैक')

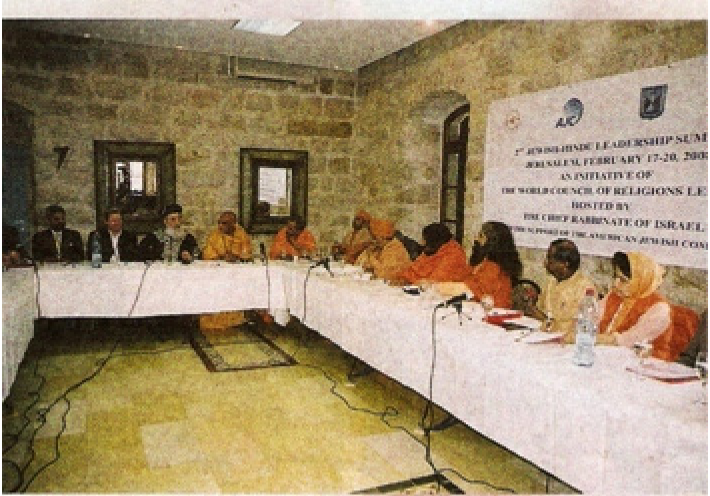

Second Hindu-Jewish Leadership Summit

3 - यहूदी धर्म

हिन्दू धर्म आचार्य सभा की उपरोक्त गतिविधियों के संदर्भ में यह अनुचित न होगा कि हम यहूदी धर्म के **असली स्वरूप** को अच्छी तरह जान लें। मित्र चुनते समय उनके चरित्र तथा जीवन-मूल्यों को समझना उचित होता है क्योंकि **उनका साथ** हमारे अपने चरित्र तथा हमारे अपने जीवन-मूल्यों को भी प्रभावित करता है - कर सकता है।

ईसाई बाइबिल का प्रथम खण्ड ओल्ड टेस्टामेन्ट **यहूदी मूल** का है। थोड़े समय के लिए इसे एक **"बीज"** के रूप में कल्पना करें। इस बीज ने एक अनोखी प्रक्रिया को जन्म दिया जो है - **पृथ्वी पर वर्तमान समस्त संस्कृतियों का समूल नाश कर दो। इसी बीज से उत्पत्ति हुई ईसाई धर्म तथा इस्लाम की।**

संदर्भ - ऑक्सफ़ोर्ड शब्दकोश पृष्ठ 1291, 988, 5, 1955, 1374

> "ओल्ड टेस्टामेन्ट - ईसाई बाइबिल का प्रथम खण्ड"
>
> "यहूदी धर्म - यहूदियों का एकेश्वरवादी धर्म - इसके उद्भव के लिए यहूदी धर्म देखता है इन धर्मग्रंथों की ओर (1) बाइबिल में लिपिबद्ध - ईश्वर की अब्राहम से की गई प्रतिज्ञा एवं (2) Torah (असली उच्चारण **टॉर्-अ**) में लिपिबद्ध, ईश्वर (जेहोवाह) द्वारा मोज़ेज़ (मूसा) को व्यक्त किए गए ईश्वरीय कानून"
>
> "अब्राहम - (बाइबिल में) - यहूदियों में मानव जाति का पिता जिसके वंशज हैं सभी यहूदी (अध्याय जेनेसिस 11:27 से 25:10)"
>
> "टॉर्-अ (Torah) - ईश्वर का कानून - जैसा कि ईश्वर ने व्यक्त किया मोज़ेज़ को - एवं इसे लिपिबद्ध किया गया हिब्रू धर्मग्रंथों के प्रथम पाँच पुस्तकों में (द पेन्टाट्यू)"
>
> "पेन्टाट्यू - ओल्ड टेस्टामेन्ट की प्रथम पाँच पुस्तकें (जेनेसिस, एक्सोडस, लेविइकस, नम्बर्स एवं डिउटेरॉनॉमी) - यहूदी नाम Torah (असली उच्चारण **टॉर्-अ** / हमारी सुविधा हेतु तोराह)"

अर्थात

"ईसाई बाइबिल" का प्रथम खण्ड है ओल्ड टेस्टामेन्ट। यहूदी इन धर्म ग्रन्थों को मानते हैं (अ) बाइबिल एवं उसमें दी गई "ईश्वर की अब्राहम से की गई" प्रतिज्ञा (ब) टॉर्-अ एवं उसमें दर्ज की गई "ईश्वर द्वारा मोज़ेज़ (मूसा) को व्यक्त किए गए" ईश्वरीय कानून। **अब्राहम का स्थान यहूदियों, ईसाइयों एवं मुसलमानों में वही है, जो मनु का स्थान हिंदुओं में है।** हिब्रू धर्मग्रंथों के प्रथम पाँच पुस्तकों में यहूदियों के ईश्वर के कानून दर्ज हैं जिन्हें टॉर्-अ या पेन्टाट्यू कहा जाता है। बाइबिल के प्रथम पाँच पुस्तकों (जेनेसिस, एक्सोडस, लेविइकस, नम्बर्स एवं डिउटेरॉनॉमी) को भी पेन्टाट्यू या टॉर्-अ कहा जाता है। **अर्थात यहूदियों के ईश्वरीय कानून को जानने के लिए ईसाई बाइबिल ही पर्याप्त है।**

पवित्र बाइबिल में यहूदी धर्म के ओल्ड टेस्टामेन्ट के लॉर्ड (ईश्वर) के वे कानून जो अन्य धर्मों के अस्तित्व पर सीधा चोट करते हैं

पूरी तरह से नष्ट कर दो उन राष्ट्रों को - जो किसी भी अन्य ईश्वर की पूजा करते हों - जब उन पर तुम अपना अधिकार करो। पूरी तरह से पराजित कर दो उनके देवताओं को, तोड़ डालो उनकी सभी मूर्तियाँ। नष्ट कर दो हर उस चीज को जो उनके देवताओं के पूजा की विधि से जुड़े हों। उनके देवताओं के मूर्तियों को नष्ट कर दो और उस स्थान से उनके देवताओं के नाम और निशान तक मिटा दो। हिंसक भाव से कत्ल कर डालो उनके बच्चों को - उन्हीं की आँखों के सामने - उजाड़ डालो उनके घरों को - और बलात्कार करो उनकी पत्नियों का। उनके प्रत्येक नन्हें बालक का कत्ल कर डालो - उनकी स्त्रियों को मार डालो - पर उनकी कुमारियों को अपने लिए जीवित रखो। माँ का दूध पीते बच्चों को न छोड़ो और सफ़ेद बाल वाले बूढ़ों को भी न बख्शो। पालन करते रहो इन नियमों का - जब तक तुम जीयो इस धरती पर - कभी भी मत भूलो इन्हें।

पवित्र बाइबिल का ओल्ड टेस्टामेन्ट किस गॉड तक पहुँचाने का रास्ता दिखाता है? क्या उसी रास्ते से हम हिन्दू धर्म के ईश्वर तक भी पहुँच सकते हैं?

पवित्र बाइबिल - ओल्ड टेस्टामेंट - **डिउटेरॉनॉमी** 12:2 "तुम **पूरी तरह विनाश** कर दोगे उन सभी स्थानों का जिन पर **तुमने अधिकार किया,** यदि वहाँ के लोग **किसी भी अन्य भगवान** की पूजा करते हों, चाहे वे ऊँचे पर्वतों पर बसते हों, या पहाड़ियों पर, या फिर हरी-भरी वादियों में।"

पवित्र बाइबिल - ओल्ड टेस्टामेंट - **डिउटेरॉनॉमी** 20:16 एवं 20:17 "उन शहरों को जिनका तुम्हें - तुम्हारे भगवान ने **उत्तराधिकारी बनाया** - उन शहरों के लोगों में से **किसी को भी साँस लेता न छोड़ना** - उन्हें **पूर्णतया नष्ट** कर देना।"

पवित्र बाइबिल - ओल्ड टेस्टामेंट - **डिउटेरॉनॉमी** 32:24 एवं 32:25 "उन्हें भूख से **तड़पाओ** और जलती हुई **आग की लपटों** को निगल जाने दो उनके शरीरों को, उनकी मौत अत्यंत दुःखद हो, मैं भी भेजूँगा जानवरों को जिनके दाँत उनके शरीरों पर गड़ेंगे और साँपों को जिनका विष उन्हें धूल चटाएगा - बिना तलवार के उनके दिलों में **आतंक** भर दो, **नष्ट** कर दो जवाँ मर्दों को, कुमारियों को, **माँ का दूध पीते नन्हे बच्चों** को, और **वृद्धों को जिनके बाल पक चुके हों।"**

"डिउटेरॉनॉमी, बाइबिल की पाँचवी पुस्तक" ऑक्सफ़ोर्ड डिक्शनरी पृष्ठ 504

यहूदियों का लॉर्ड अपने अनुयायियों से कह ता है कि उन संस्कृतियों का विनाश कर दो जो मेरी पूजा नहीं करते

पवित्र बाइबिल - ओल्ड टेस्टामेंट - **एक्सोडस** 23:24"तुम दूसरों के गॉड (ईश्वर) के सामने न तो झुकोगे और न उनकी सेवा करोगे, बल्कि उन्हें पूरी तरह से विध्वंश कर दोगे, उनकी मूर्तियों को तोड़-फ़ोड़ कर नष्ट कर दोगे।"

पवित्र बाइबिल - ओल्ड टेस्टामेंट - **एक्सोडस** 34:13 "तुम उनकी पूजा की वेदियों को **ध्वंश कर दोगे**, उनकी मूर्तियों को **तोड़ दोगे,** उनके उपवनों को काट डालोगे।"

"एक्सोडस - बाइबिल की दूसरी पुस्तक" ऑक्सफ़ोर्ड डिक्शनरी पृष्ठ 645

पवित्र बाइबिल - ओल्ड टेस्टामेंट - **डिउटेरॉनॉमी** 12:3 "और तुम उनके पूजा की वेदियों को **विध्वंश कर दोगे,** उनके पूजा के स्तम्भों को तोड़ दोगे, उनके उपवनों को **जला दोगे,** उनके देवी-देवताओं के अंकित चित्रों को चीर डालोगे, गढ़ी हुई मूर्तियों को काट डालोगे, उनका **नाम तक वहाँ से मिटा डालोगे।"**

उनकी पत्नियों एवं बच्चों के साथ कैसा व्यवहार करो -

पवित्र बाइबिल - ओल्ड टेस्टामेंट - **ईसाइयाह** 13:16 "उनकी **आँखों के सामने** उनके **बच्चों को पूरी शक्ति के साथ उठा कर पटको** ताकि उनके टुकड़े-टुकड़े हो जायें, और उनकी **पत्नियों का बलात्कार करो।"**

"ईसाइयाह - एक बड़ा महत्वपूर्ण **हिब्रू (यहूदी) पैगम्बर** था" ऑक्सफ़ोर्ड डिक्शनरी पृ 966

पवित्र बाइबिल - ओल्ड टेस्टामेंट - **नम्बर्स** 31:17 एवं 31:18 "**बच्चों में** प्रत्येक नर का **कत्ल कर डालो** और प्रत्येक उस स्त्री का भी जिसने किसी पुरुष के साथ सहवास किया हो - पर उन सभी **मादा बच्चों** को जिन्होंने किसी पुरुष के साथ सहवास न किया हो, उन्हें **अपने लिए जीवित रखो**।"

"नम्बर्स - बाइबिल की चौथी पुस्तक" ऑक्सफ़ोर्ड डिक्शनरी पृष्ठ 1272

क्या सभी रास्ते **एक ही ईश्वर** तक ले जाते हैं? क्या वे सभी **एक ही ईश्वर** की बात कर रहे हैं? बाइबिल के ईश्वर का व्यक्तित्व इतना अलग और भगवद्गीता के ईश्वर का व्यक्तित्व इतना अलग **- ऐसा क्यों?** क्या हम हिंदुओं के प्रति **न्याय कर रहे हैं** - उनसे यह कह कर कि **अपनी आँखों पर पट्टी** बाँध लो, अपने **कान ढाँप** लो, अपने **होठों को सी** लो?

जब हिन्दू को यह बताया जाता है कि **सभी धर्म एक समान हैं** तो वह सभी धर्मों को एक दृष्टि से देखता है। दूसरे धर्म, जो हिन्दू धर्म को धीरे-धीरे **मिटा देने के लिए** सदा से कार्यरत रहे हैं, उनकी तरफ से, अपनी ओर बढ़ रहे, खतरे से वह **पूरी तरह अनभिज्ञ** रहता है।

यदि हम अपनी संतानों को एक ऐसी विचाार-धारा के साथ पाल कर बड़ा करें - जो एक **बड़े भारी असत्य के आधार पर** खड़ा हो - तो हम उनसे यह नहीं आशा कर सकते हैं कि वे बड़े होकर - **अपने प्रति एवं समाज के प्रति** - सत्यनिष्ठ बनेंगे। जब हम उन्हें निहत्था कर देते हैं - **उनकी सोच और समझ को** एक बड़े असत्य से ढाँक कर तो मूलतः हम **अपने उत्तराधिकारियों के रूप में** कापुरुषों एवं पाखण्डियों का एक झुंड तैयार करते हैं।

इस कारण हमारे लिए सच्चाइयों को जानना अत्यंत आवश्यक है। हमारे लिए यह भी अत्यंत आवश्यक है कि हम अपने प्रति, अपनी संततियों के प्रति, एवं अपने समाज के प्रति सत्यनिष्ठ बनें, **जो कदापि संभव नहीं** यदि हम सत्य को उसके नग्न स्वरूप में देखने का साहस न जुटा पायें। यदि हम अपने इस दायित्व से चूक जाते हैं तो **इतिहास हमें कभी क्षमा नहीं करेगा।**

यहाँ छुपा है स्थायित्व का बीज

पवित्र बाइबिल - ओल्ड टेस्टामेंट - **डिउटेरॉनॉमी** 12:1 "ये हैं (बाइबिल के) लॉर्ड (ईश्वर) के विधान (कानून) जिनका तुम पालन करोगे तब तक **जब तक तुम इस पृथ्वी पर जिओगे।"**

क्या उनके गॉड के ये विधान केवल पवित्र बाइबिल के पन्नों तक ही सीमित रहे? या फिर उन्होंने इनका अक्षरशः पालन भी किया?

"द एम्पायर ऑफ़ द सोल " में पॉल विलियम रॉबर्टस लिखते हैं

(1) माता-पिता के आँखों के सामने **बच्चों को** कोड़े लगाए जाते और फिर उनके शरीर के **टुकड़े-टुकड़े** किए जाते - माता-पिता के पलकों को उखाड़ दिया जाता ताकि वे अपनी **आँखों को बंद न कर सकें** - बच्चे छटपटाते रहते - (ईसाई न बनने के दंड स्वरूप) माता-पिता इस वीभत्स दृश्य को अपनी आँखों के सामने देखते रहने के लिए बाध्य किए जाते - बहुत ही सावधानी के साथ माता-पिता के हाथ-पाँव काटे दिये जाते **ताकि वे बेहोश न हों** और होश में रहते हुए यह सब कुछ **देख सकें** - केवल उनके पेट से लेकर सर तक का भाग बचा रहता, दोनों हाथ-पाँव कटे होते और पलकें उखाड़ ली गई होतीं

(2) पुरुषों के **जननेंद्रिय को निकाल** लिया जाता और उनके **पत्नियों के समक्ष जलाया** जाता

(3) स्त्रियों के **स्तनों को काट** दिया जाता एवं उनकी **योनि में तलवार घुसेड़** दी जाती - **उनके पति** इस घृणित कार्य को **देखते रहने के लिए बाध्य** किये जाते और यह चलता रहा **दो सौ वर्षों तक!**

संदर्भ *The Empire of the Soul,* Paul William Roberts, Harper Collins, 1999, quoted in *The Saint Business*, Rajeev Srinivasan, *Hindu Voice,* Nov 2003, p 4-5

सदियाँ बीत गईं पर वे भूले नहीं। उनके शिकार बने गोवा के हिन्दू **ब्राह्मण**। यह होता रहा दो सौ वर्षों तक - **बिना किसी व्यतिक्रम** के - 1560 से 1812 ईस्वी तक। जिस मस्तिष्क से इन कार्यकलापों की उत्पत्ति हुई उस व्यक्ति को **आज ईसाई** एक **संत** के रूप में जानते हैं और **अपने आदर्श** के रूप में मानते हैं। उस संत के नाम पर असंख्य स्कूल/कॉलेज हैं जहाँ **आज हिन्दू बच्चे** पढ़ने जाते हैं और उसे एक **महात्मा/संत** मानते हुए बड़े होते हैं।

> **पवित्र बाइबिल** - ओल्ड टेस्टामेंट - **एक्सोडस** 34:14 "तुम **किसी भी दूसरे भगवान** की सेवा न करोगे क्योंकि **लॉर्ड, जिसका नाम ईर्ष्यालु** है, वह एक **ईर्ष्यालु ग़ॉड** हैं।"

गाँधी के वे तीन बंदर

आपने वह कहानी तो पढ़ी ही होगी? गाँधी के तीन बंदरों की कहानी - एक बुरा न देखता, दूसरा बुरा न सुनता, तीसरा बुरा न कहता - उन तीनों ने एक-एक कर अपनी आँखें, अपने कान, अपनी जुबान बंद कर ली थी। वे केवल **अपने अंदर की बुराइयों** को नष्ट करने की बात सोचते रहे। अपने चहुँ ओर व्याप्त बुराइयों पर नजर डालने से **सदा इंकार करते रहे।**

इस प्रतीक में तो तीन बंदर ही थे। पर जब बात मानव पर आई तो उसने सोचा कि हमें बंदरों से भी आगे बढ़ जाना चाहिए। अतः उन्होंने निर्णय किया कि क्यों न हम **ऑल-इन-वन** बन जायें। उन्होंने अपनी आँखे बंद कर लीं, अपने कानों को ढक लिया और अपनी जुबान को सी दिया। इस प्रकार उन्होंने **अच्छे और बुरे के बीच के फ़रक** को पहचानने की योग्यता भी खो दी। इसे माना गया एक महत्वपूर्ण उन्नति - वानर के अस्तित्व से ऊपर उठकर - मानव तत्व की ओर विकास के रूप में। इस प्रकार बना दिया उन्होंने **धार्मिक व्यक्ति को पूर्णतः शस्त्र-विहीन** एवं अधार्मिक व्यक्ति को अधिपति इस धरती का - जहाँ तक उसकी दृष्टि जाती।

वह अप्रिय सत्य

हिंदू बच्चा अपने विद्यालय के शिक्षक पर विश्वास करता है। शिक्षक कहता है - सभी धर्म समान हैं। हिंदू बच्चा एक दिन बड़ा होता है एवं प्रौढ़ बन जाता है और तब अपने इस विश्वास को अपने बच्चों के लिए **विरासत में छोड़ जाता है।**

आज का हिंदू इसके आगे नहीं सोचता। उसकी जिज्ञासा यहीं शांत हो जाती है। वह व्यस्त हो जाता है अपने परिवार के लिए रोटी, कपड़ा, मकान जुटाने में एवं उनके लिए एक सुरक्षित भविष्य की व्यवस्था करने में।

उसे इस बात का अहसास नहीं होता कि एक दिन आयेगा जब उसे - या फिर उसकी संतति को - उस अप्रिय सत्य का सामना करना पड़ेगा **जिसे वह अनदेखा कर रहा है।** पर तब तक बहुत देर हो चुकी होगी।

और तब, हम अपने आप को इस जगह पर पायेंगे

"यदि तुम नहीं लड़ोगे तब, जब तुम्हें विजय मिल सकती है, बिना किसी रक्तपात के - यदि तुम नहीं लड़ोगे तब, जब तुम्हारी विजय सुनिश्चित है एवं बहुत महंगी नहीं - वह घड़ी आयेगी जब तुम्हें लड़ना होगा और सारी परिस्थितियाँ तुम्हारे विरुद्ध होंगी एवं बहुत कम सम्भावना रह जायेगी तुम्हारे जीवित रहने की। इससे भी बदतर स्थिति आ सकती है - जब तुम्हें लड़ना होगा, विजय की आशा के बिना - क्योंकि मर जाना बेहतर है गुलाम बन कर जीने से।"

उपरोक्त बात एक व्यक्ति ने तब कही थी जब उसके ईसाई राष्ट्र का अस्तित्व खतरे में था। क्या यही बात उतनी ही सत्य नहीं है **आज हिन्दू धर्म के अस्तित्व के संदर्भ में?** सोच कर देखिए।

वह नन्हा सा बीज

क्या आपने देखा है एक नन्हें से बीज को, जो उपजाऊ जमीन, खाद, पानी पाकर, समय के साथ, एक प्रकाण्ड वृक्ष बन गया। क्या आपने देखा उस वृक्ष को - जो खड़ा था एक विराट शक्तिशाली प्रासाद के बहुत निकट - जिसने समय के साथ धीरे-धीरे उसी विराट प्रासाद के नीचे - **फैला दी अपनी जड़ें, काफ़ी दूर-दूर तक** एवं पर्याप्त गहराई में जाकर - **जिसे न देख पाये उसी प्रासाद में रहने वाले लोग।**

फिर वह दिन आया जब आपको बताया गया कि उसी प्रासाद की मज़बूत फ़र्श पर दरारें दिखने लगी हैं। जब आप पहुँचे पर्यवेक्षण के लिए तो आपकी नज़र पड़ी उन दरारों पर जो तेजी के साथ चौड़ी होती जा रही थीं और अब बहुत स्पष्ट रूप से दिखने लगी थीं। यह वह समय था जब - सम्भवतः - आपके मानस-पटल पर **वह भयावह छवि उभरी** कि अब बहुत देर हो चुकी है।

आपके पास अब केवल एक ही रास्ता बचा था। वह यह कि सम्पूर्ण प्रासाद को ढहा देना होगा इसके पहले कि आप उस अवांछित विशाल वृक्ष को जड़ से उखाड़ फ़ेंक सकें। अब आप अपने आप को कितना असहाय पा रहे थे।

समय रहते आप अपनी नजरें फेरे रहे उस सच्चाई से जिसे आप देखना नहीं चाहते थे। **वह वृक्ष अपनी जड़ें फैलाता रहा आपकी नाक के नीचे और आप आसमान की ओर देखते रहे।**

ISBN 81-89746-22-7 (2006) पर आधारित

अगला अध्याय है ISBN 81-89746-14-6 (2005) पर आधारित

4 - इस्लाम

कुर'आन की उत्पत्ति में बाइबिल का भी अदृष्य हाथ है। इस्लाम के **पैगंबर की जबानी सुनिए** इसका प्रमाण जो कुर'आन में लिखित रूप से दर्ज है। कुर'आन सूरा 9 अत'तौबा आयत 111 में आप पायेंगे कि यहूदियों के धर्मग्रंथ टॉर्-अ (Torah), ईसा की जीवनी एवं उनकी शिक्षाओं की पाण्डुलिपि गॉस्पेल (Gospel), एवं कुर'आन में एक ही वादा किया है जेहोवाह (Jehovah) ने यहूदियों से, गॉड (God) ने ईसाइयों से एवं अल्लाह ने मुसलमानों से - यह वादा एक ऐसी कड़ी है जो यहूदियों, ईसाइयों एवं मुसलमानों को एक भाईचारे की भावना से बाँधता है क्योंकि **उन तीनों के पूर्वपुरुष अब्राहम** थे जैसे हिन्दुओं के पूर्वपुरुष मनु थे। और यही भाईचारा **उन तीनों को** मूर्तिपूजक हिन्दुओं का **समूल नाश करने की प्रेरणा** देता है।

> **कुर'आन** सूरा 9 **अत'तौबा** आयत 111 अल्लाह ने खरीद लिया है, अल्लाह पर विश्वास करने वालों से (अर्थात मुसलमानों से), उनकी जिन्दगी और उनकी धन-सम्पत्ति क्योंकि (जन्नत) स्वर्ग उनका होगा - वे लड़ेंगे अल्लाह के लिए, हिंसा पूर्वक कत्ल करेंगे अल्लाह के लिए, और कट मरेंगे अल्लाह के लिए। **यह वचन है अल्लाह का टॉर्-अ (Torah यहूदियों का धर्मग्रंथ) में, गॉस्पेल (Gospel ईसा की जीवनी एवं शिक्षायें) में, एवं कुरआन में, जिससे वह बधें हैं।** अल्लाह से बेहतर कौन पूरा करता है अपनी प्रतिज्ञा? आनन्द मनाओ कि यह जो **सौदा** तुमने किया है (अल्लाह से) यही तुम्हारी सबसे बड़ी **उपलब्धि** है।

अल्लाह का पैगाम, पैगंबर के नाम

जैसे हम हिंदू वेदों को अपौरुषेय, ईश्वरीय रचना मानते हैं, उसी प्रकार मुसलमान कुरआन को *अपौरुषेय, अल्लाह का पैगाम,* मानते हैं। उसमें जो कुछ भी लिखा है, उसे अल्लाह का आदेश मान, उसका *अक्षरशः पालन करना,* प्रत्येक मुसलमान अपना प्रमुख कर्तव्य मानता है।

किसी भी मुसलमान को इसका विरोध करने का हक नहीं

> **कुरआन** सूरा 33 **अल-अहज़ाब** आयत 36 - जब अल्लाह एवं उसके पैगंबर ने निर्णय कर लिया है, किसी भी बात पर, तो **किसी मुसलमान मर्द या औरत को यह हक नहीं,** कि वह उस बारे में, कुछ भी कह सके। स्रोत - *कुरआन मजीद* पृष्ठ 752 मदीना में उतरी मुहम्मद के नाम अल्लाह का पैगाम

> **कुरआन** सूरा 4 **अन-निसा** आयत 56 - वे जो अल्लाह के आदेश को नहीं मानते हैं, हम उन्हें **आग में झोंक देंगे** और जब उनकी **चमड़ी पिघल जाए** तो हम उनकी जगह नई चमड़ियाँ डाल देंगे ताकि उन्हें **स्वाद मिले यंत्रणा का।** अल्लाह सबसे अधिक शक्तिमान हैं एवं विवेक पूर्ण हैं। स्रोत - *कुरआन मजीद* पृष्ठ 231 मदीना में उतरी मुहम्मद के नाम अल्लाह का पैगाम

कुरआन सूरा 9 **अत-तौबा** आयत 39 - ऐ मुसलमानों, **अगर तुम युद्ध न करो** तो अल्लाह तुम्हें कड़ी सजा देगा और तुम्हारी जगह पर दूसरे आदमी को लायेगा। स्रोत ISBN 81-85990-58-1, p 257

कुरआन सूरा 2 **अल-बकरा** आयत 216 - लड़ना तुम्हारी **मजबूरी** है, चाहे तुम कितना भी **नापसंद** करो इसे। स्रोत ISBN 8185990581, p 255

कुरआन सूरा 9 **अत-तौबा** आयत 41 - चाहे तुम्हारे पास हथियार हों या न हो, चल पड़ो, और **लड़ो अल्लाह की खातिर,** अपने धन और अपने शरीर के साथ। स्रोत ISBN 8185990581, p 255

हदीस - जो पैगम्बर ने किया, उसे मुसलमान को दोहराते जाना होगा कयामत तक

इस्लाम के दो अंग हैं। एक कुरआन और दूसरा हदीस। कुरआन है अल्लाह का पैगाम हर मुसलमान के नाम। हदीस है अल्लाह के द्वारा किए गए काम, पैगंबर मुहम्मद के जरिए। कुरआन यदि अल्लाह की आवाज़ है तो हदीस अल्लाह के कारनामों का जीता-जागता नमूना। पैगंबर ने क्या किया, कब किया, कहाँ किया, कैसे किया, किसको किया, क्यों किया, यह सब बड़ी ही ईमानदारी, एवं बड़े ही गर्व, के साथ लिपिबद्ध किया गया है, हदीस में। जो लिखा है हदीस में वह सुन्ना बन गया और हर मुसलमान का फर्ज बन गया कि कयामत तक उनका अनुकरण करे। देखिए, कितना भयावह / क्रूर था वह सब जो आज के आम मुसलमान के लिए अनुकरणीय बना -

साहीह बुखारी 82.794-7 एवं **साहीह मुस्लिम** 4130-7 - **पैगंबर ने** उन्हें पकड़वाया। उसके बाद **उन्होंने आदेश दिया** कि उनके हाथ और पाँव काट दिए जायें, उनकी **आँखों में गर्म लोहे के सलिए** घुसेड़ दिए जायें। उन्होंने आदेश दिया कि हाथ-पाँव के जख्मों को खुला छोड़ दिया जाये **ताकि खून रिसता रहे उनके मरते दम तक।** और जब उन्होंने पानी माँगा, तो उन्हें **पानी नहीं दिया गया।** (टिप्पणी - यह सजा दी गई थी, **उक्ल जनजाति** के कुछ लोगों को, जो इस्लाम कबूल करने के बाद, **इस्लाम छोड़** गए) स्रोत ISBN 81-900199-8-8, p 94

साहीह बुखारी 84.057 - जो भी इस्लाम को छोड़ दूसरा धर्म अपनाये, **उसका कत्ल कर** डालो। स्रोत ISBN 81-900199-8-8, pp 93-94

कुरआन सूरा 4 **अन-निसा** आयत 91 - वे जो पीठ मोड़ लें, उन्हें पकड़ो जहाँ भी उन्हें पाओ, और **उनका हिंसा पूर्वक कत्ल कर डालो।** स्रोत ISBN 81-900199-8-8, p 93

गैर-मुसलमानों के प्रति बेरहम बनो, मुसलमानों के प्रति दयालु बनो

कुरआन सूरा 48 **अल-फ़त्ह** आयत 29 - मुहम्मद अल्लाह के पैगंबर हैं। जो उनका

अनुसरण करते हैं वे **गैर-मुसलमानों के प्रति बेरहम होते हैं पर एक दूसरे (मुसलमानों) के प्रति दयालु** होते हैं। स्रोत ISBN 81-85990-58-1, p 258

यदि हर व्यक्ति मुसलमान न बना

कुरआन सूरा 60 **अल-मुम्तहना** आयत 4 - **शत्रुता एवं घृणा** ही रहेगी हमारे बीच **तब तक** जब तक तुम **केवल अल्लाह** के बंदे न बन जाओ। स्रोत ISBN 81-85990-58-1, p 262

कुरआन सूरा 22 **अल-हज़्ज़** आयत 19-22 - आग के परिधान (वस्त्र) बनाये गए हैं उनके लिए **जो इस्लाम को नहीं अपनाते। उबलता हुआ पानी उनके सर पर** डाला जायेगा ताकि उनकी चमड़ी भी पिघल जाए और वह सब भी पिघल जाए जो उनके पेट में है (अँतड़ियाँ भी)। उन पर कोड़े - **आग में तपते हुए लाल लोहे के कोड़े - बरसाये जाएँ।** स्रोत ISBN 81-85990-58-1, p 266

कुरआन सूरा 69 **अल-हक्का** आयत 30-33 - उसे पकड़ो और उसे बाँधो। **जलाओ** उसको नर्क की आग में और उसके बाद बाँधो उसे एक जंजीर से, जो हो सत्तर क्युबिट लंबा, **क्योंकि** उसने अल्लाह को नहीं स्वीकारा, जो हैं सबसे ऊपर। स्रोत ISBN 8185990581, p257

कुरआन सूरा 8 **अल-अनफ़ाल** आयत 12 - **जो मेरे अनुयायी नहीं हैं, मैं उनके दिलों में दहशत भर दूँगा।** उनके सर धड़ से अलग कर दो, उनके हाथ और पाँव को इस कदर जखमी कर दो कि वे **किसी भी काम के लायक न रह जायें।** स्रोत ISBN 8185990581, p 256

कुरआन सूरा 8 **अल-अनफ़ाल** आयत 15 से 18 तक - **वो तुम नहीं, बल्कि अल्लाह था, जिसने उन्हें हिंसापूर्ण ढंग से उन्हें मार डाला। वह तुम नहीं थे जिसने उन पर दृढ़ता पूर्वक प्रहार किया। अल्लाह ने उन पर दृढ़ता पूर्वक प्रहार किया ताकि वह तुम जैसे अनुयायी को भरपूर पुरस्कार दे सके।** स्रोत ISBN 81-85990-58-1, p 257

तुम्हारे आस-पास जो भी गैर-मुसलमान बसते हों

कुरआन सूरा 9 **अत-तौबा** आयत 123 - मुसलमानों, **तुम्हारे आस-पास जो भी गैर-मुसलमान बसते हैं,** हमला बोल दो उन पर, उन्हें जताओ कि तुम कितने कठोर हो। स्रोत ISBN 81-85990-58-1, p 255

कुरआन सूरा 9 **अत-तौबा** आयत 73 - ओ पैगंबर! **जो मुझमें विश्वास नहीं करते,** उनसे युद्ध छेड़ो। उन पर कठोर बनो। उनका अंतिम ठिकाना नरक है, एक दुर्भाग्य पूर्ण यात्रा का अंतिम चरण। स्रोत ISBN 81-85990-58-1, p 255

कुरआन सूरा 66 **अत-तहरीम** आयत 9 - **ओ पैगंबर! जो मुझमें विश्वास नहीं करते,** उन पर हमला करो और उनके साथ कठोरता से पेश आओ। नर्क उनका निवास होगा, दुर्भाग्य पूर्ण उनका भाग्य होगा। स्रोत ISBN 8185990581, p 255

एक ही पैगाम, भिन्न-भिन्न ढंग से, भिन्न-भिन्न स्थलों पर, मिलेगा कुरआन में। अध्याय 9 में भी वही बात और फिर अध्याय 66 में भी। **उद्देश्य स्पष्ट है। मुसलमान कभी भूले से भी, न भूले। चाहे वह कुरआन शुरुआत से पढ़ रहा हो, या मध्य से, या अंत में, उसे वही सब मिले बार-बार, लगातार। जब एक ही तरह की बातें दोहरायी जाती हैं तो उनका असर पढ़ने वालों के दिमाग पर गहरा होता है। जैसे कुरआन के पन्नों पर छपी होती है, वैसे ही मुसलमान के दिलो-दिमाग पर वह बात छप जाती है।**

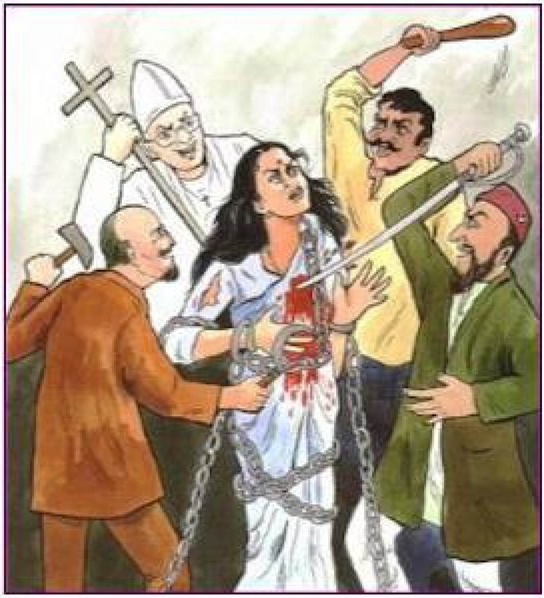

इस्लाम की सत्ता हो सारी धरती पर - मूर्ति पूजा का नामों-निशाँ मिटा दो

कुरआन सूरा 9 **अत-तौबा** आयत 7 - अल्लाह और उनके पैगंबर मूर्ति पूजकों को **विश्वास की दृष्टि से नहीं देखते।** स्रोत ISBN 8185990581, p 262

कुरआन सूरा 9 **अत-तौबा** आयत 2-3 - **अल्लाह** एवं उनके **पैगंबर मुक्त** हैं, **किसी भी दायित्व** से, **मूर्ति पूजकों के प्रति**... उन्हें ऐसी सजा दो कि वे शोक ग्रस्त हो जायें। स्रोत ISBN 81-85990-58-1, p 259

कुरआन सूरा 8 **अल-अनफ़ाल** आयत 39 - तब तक उन पर हमला करते रहो जब तक **मूर्ति पूजा का नामों निशाँ न मिट जाये और सब अल्लाह के मज़हब के अधीन न बन जायें।** स्रोत ISBN 8185990581 p255

कुरआन सूरा 2 **अल-बकरा** आयत 193 - **तब तक उनसे लड़ते रहो,** जब तक **मूर्ति पूजा बिल्कुल खत्म** न हो जाये और **अल्लाह का मज़हब सब पर राज** न करे। स्रोत ISBN 81-85990-58-1, p 255

यदि आप निराकार ब्रह्म को मानते हों तो आपके साथ यह सब न होगा, इस गलतफ़हमी में न रहें। यदि आप मुसलमान न बनें तो भी आपके साथ यही सब होगा और किसी मुसलमान को इसका हक नहीं कि इसका विरोध करे।

केवल युद्ध जीतना ही काफ़ी नहीं, कत्लेआम भी जरूरी

कुरआन सूरा 8 **अल-अनफ़ाल** आयत 12 - **पैगंबर,** युद्ध बंदी तब तक न बनायेगा, **जब तक वह,** उस जमीन पर **कत्लेआम न कर ले।** स्रोत ISBN 81-85990-58-1, p 259

यह बच्ची जो आज कुर'आन पढ़ रही है, कभी वह बड़ी होगी, माँ बनेगी, तब अपनी संतानों को क्या सिखायेगी? वही सिखायेगी जो उसने कुर'आन से सीखा है और फिर उसके बच्चे उन सीखों को अमल में लायेंगे। सदियों से यही होता रहा है, आज भी यही हो रहा है, और कल भी यही होता रहेगा। ऐसी स्थिति में क्या हिन्दू के लिए भी यह जानना उतना ही जरूरी नहीं है जितना कि मुसलमान के लिए - कि कुर'आन व हदीस अपने अनुयायियों को क्या सिखाते हैं?

जन्नत किसका होगा और दोजख किसका

कुरआन सूरा 47 **मुहम्मद** आयत 4 से 15 तक - जब तुम्हारा सामना हो **गैर-मुसलमानों** से, युद्धभूमि पर, उनके **सर काट** डालो। जब तुम उन्हें **कुचल डालो** तो कस कर बाँधो। उनसे **धन वसूल** करो। उनके हथियार डलवा दो। तुम ऐसा ही

करोगे। यदि अल्लाह ने चाहा होता तो वह स्वयं उन्हें नष्ट कर देता, तुम्हारी सहायता के बिना। पर उसने यह आदेश दिया है, **ताकि वह तुम्हारी परीक्षा ले सके।** और वे जो अल्लाह के लिए लड़ते हुए कट मरेंगे, अल्लाह उनके काम को व्यर्थ न जाने देगा। **वह उन्हें जन्नत में बुला लेगा।** अल्लाह का यह वचन है।...मुसलमानों, यदि तुम अल्लाह की सहायता करते हो, तो अल्लाह तुम्हारी सहायता करेगा, और तुम्हें मज़बूत बनायेगा। पर जो अल्लाह का न होगा वह अनन्त काल तक नरक में सड़ेगा। **अल्लाह केवल मुसलमानों की ही** रक्षा करेगा। गैर-मुसलमानों का कोई भी रखवाला नहीं। जो **सच्चे धर्म (इस्लाम)** को अपनायेंगे उन्हें अल्लाह जन्नत में दाखिल करेगा। **जो मुसलमान नहीं बनेंगे, वे वही खायेंगे जो जानवर खाते हैं, नर्क उनका घर होगा... वे वहाँ अनन्त काल तक रहेंगे, और खौलता हुआ पानी पियेंगे जो उनकी अँतड़ियों को चीर देगा।** स्रोत ISBN 81-85990-58-1, p 256

जन्नत के हूर और अंतहीन ऐयाशी

सदियों से **मुसलमानों को, इस्लाम की जिस बात ने आकर्षित** किया है, वह बात कुछ और ही है। जन्नत की खूबसूरत कुमारियों का झुंड। कुमारियाँ जिनकी उम्र कभी नहीं बढ़ती और जिनका आकर्षण कभी नहीं घटता। जो कभी नहीं थकते नए-नए मज़े देने में और ढेर सारे मज़े देने में। **यह सब मिलता है केवल उनको जो इस्लाम के लिए जीए और इस्लाम की खातिर मरे। जन्नत के बारे में कामुकता भरे और चटकीले विवरणों से भरा पड़ा है इस्लाम के ज्ञान का पूरा साहित्य, कुरआन और हदीस से आरंभ कर।** स्रोत ISBN 81-85990-58-1, प्राक्कथन पृष्ठ XV, सीता राम गोयल

सोच कर देखिए, जब उनके कदम आपके घर की दहलीज को पार करेंगे तो उनकी नजर सबसे पहले कहाँ जायेगी? आपकी बहू-बेटियाँ कितनी सुरक्षित रहेंगी? या फिर, पीछे मुड़ कर देखिए, आपकी बहू-बेटियाँ कितनी सुरक्षित रहीं थीं, जब यह हिन्दुओं का देश मुसलमानों के कब्जे में रहा था। या फिर, आज को ही देखिए, मुस्लिम बहुल बांग्लादेश में हिन्दू घरों की बहू-बेटियाँ किस हाल में रह रहीं हैं (पढ़ें Seed 2)।

कहते हैं चित्र प्रतीक होते हैं

अगले अध्याय में आप देखेंगे भारत के अग्रणी चित्रकार की अभिव्यक्ति जिसमें वह अपने मुस्लिम समाज की अवक्त इच्छाओं को अपने तैलचित्रों के माध्यम से दिखाता है। श्रीराम एवं भगवान शिव का **कटा हुआ सर प्रतीक है** हिन्दू पुरुषों के कटे हुए सर का। सीता मैया, माँ दुर्गा, माँ पार्वती, माँ लक्ष्मी, माँ सरस्वती का **नग्न स्वरूप प्रतीक है** हिन्दू स्त्रियों के नग्न स्वरूप का। यही चित्रकार अपने तैलचित्रों के माध्यम से अपनी माँ, अपनी बेटी, मुस्लिम स्त्री, मुस्लिम पुरुषों को पूरे वस्त्रों सहित दिखाता है।

5 - सांस्कृतिक प्रहार

सदियों से हमारी संस्कृति को मिटाने के लिए अनेक प्रहार किए गए जिन्होंने इसे खोखला कर दिया है। वर्तमान में हो रहे कुछ प्रहारों की झलकियाँ यहाँ प्रस्तुत हैं।

इग्नू की एम-ए (इतिहास) की पाठ्य-पुस्तकें

"**दुर्गा** एक ऐसी **महिला** हैं, जिन्हें **शराब** बेहद पसन्द है। महिषासुर के साथ संघर्ष के दौरान उन्होंने शराब पी रखी थी। दुर्गा के पुरुष शत्रु उन पर आसक्त रहते थे। वे उनसे युद्ध नहीं, बल्कि विवाह करना चाहते थे। **देवी दुर्गा के परिवार ने शर्त रखी थी** कि जो कोई दुर्गा को युद्ध में हरा देगा, उसका विवाह दुर्गा से करा दिया जायेगा। दुर्गा ने साफ कर दिया था कि वह **अपने प्रेमियों के साथ** कैसे युद्ध करेंगी। देवी दुर्गा के शत्रु इसे प्यार क इजहार मानते थे।" यह सारी ऊलजलूल बातें **इंदिरा गांधी नैशनल ओपन यूनिवर्सिटी** के उन छात्रों को पढ़ाई जा रही है, जो इतिहास में एम-ए कर रहे हैं। 'धार्मिक परम्परायें और भक्ति दर्शन' नाम की इस पुस्तक में दुर्गा के अलावा अन्य हिन्दू देवी-देवताओं का भी जमकर अपमान किया है। इस किताब के पेज नंबर 29 में **भगवान शंकर** के बारे में लिखा है कि - "वह एक **नग्न रहने वाले साधु** थे, जो तपस्वियों एवं देवताओं की **पत्नियों का शीलभंग** करते थे। शिव का चरित्र विरोधाभासों से पटा था। वह तपस्वी भी थे और **कामुक** भी।" इसी तरह पेज 27 पर **कृष्ण** के बारे में लिखा है - "महाभारत युद्ध में उनकी सलाह चालाकी भरी ही नहीं बल्कि **धूर्तता पूर्ण** भी होती थी।" इग्नू (इंदिरा गांधी नैशनल ओपन यूनिवर्सिटी) के पाठ्यक्रम के लिए एक भारी भरकम **विशेषज्ञ समिति** बनाई गई है। उसी की अनुमती से किताबें लिखवायी जाती हैं, लेकिन **किसी ने भी इन बातों के लिए आपत्ति नहीं** दर्ज कराई। स्रोत - लेख शिशिर श्रीवास्तव, चैनल 7, नई दिल्ली, प्रकाशित दैनिक जागरण, नई दिल्ली संस्करण, 19-7-06, प्रेषक श्री मुरारि पचलंगिया, गुरुग्राम (हरियाणा) संदेश "अपने देश में भी दुष्प्रचार **सरकारी संरक्षण में** खूब हो रहा है।"

क्या सीखेंगी आपकी आने वाली पीढ़ियाँ? यदि हमारी शिक्षण संस्थायें अपने छात्र-छात्राओं को यह सब पढ़ायेंगे तो वे स्नातक बनकर **आने वाली पीढ़ी को** क्या सिखायेंगे? उनका उद्देश्य? **अवज्ञा रूपी विष** का बीजारोपण कर, हिन्दुओं की वर्तमान एवं भावी पीढ़ियों को धीरेधीरे, **सुनियोजित ढंग से,** पहले अ-हिन्दू और फिर हिन्दू-विरोधी बनाना। कहते हैं जैसी राजा, वैसी प्रजा। जैसे मंत्री वैसे ही उनकी अधीनता में काम करने वाले शिक्षक।

जामा मस्जिद में बिकते हिंदू देवी-देवताओं के नंगे चित्र

"नई दिल्ली। हिंदू देवी-देवताओं के नग्न चित्र बनाने के मामले में कुख्यात मकबूल फिदा हुसैन **एकमात्र ऐसे मुस्लिम नहीं** हैं जो हिन्दू देवी-देवताओं को अपमानित करते हैं, वरन दिल्ली के **सबसे बड़े इस्लामी केन्द्र** जामा मस्जिद में भी खुलेआम

हिन्दू देवी-देवताओं के नग्न चित्र बेचे जा रहे हैं। "संस्कृति सरगम" को प्राप्त एक सी-डी के द्वारा यह रहस्योद्‌घाटन हुआ। किसी अज्ञात व्यक्ति ने सी-डी समाचार पत्र के कार्यालय को भेजी। इस **सी-डी** में दिखाया गया है कि किस प्रकार जामा मस्जिद में घुसने के बाद आपको रंगीन या सादे ऐसे रेखा चित्र मिल सकते हैं जिनमें **राम, कृष्ण, सीता, हनुमान, शंकर और देवी दुर्गा के अश्लील और नग्न स्वरूप** होते हैं। सी-डी में दिखाया गया है कि चेहरा ढके सबीना नाम की एक महिला से एक व्यक्ति ऐसे चित्रों के बारे में जानकरी प्राप्त करता है तो सबीना स्वीकार करती है कि ऐसे चित्र खुलेआम जामा मस्जिद, छोटी मस्जिद में बिकते हैं और सादे चित्रों की कीमत 200 रुपये तथा रंगीन चित्रों की कीमत 500 रुपये तक है। प्रश्नकर्ता द्वारा यह पूछने पर कि इन चित्रों की बिक्री का उद्देश्य क्या है तो सबीना ने कहा कि शौकियन ये चित्र बेचे जाते हैं और लोग खरीदते हैं। सी-डी में सबीना प्रश्नकर्ता को माता सीता और हनुमान जी का ऐसा ही अश्लील चित्र दिखाती है। इसी प्रकार अजमेरी गेट स्थित **एंग्लो अरबिक उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के पास श्यामपट पर देवी दुर्गा का ऐसा ही नग्न चित्र भगवा ध्वज** के साथ **सार्वजनिक रूप से चित्रित** किया हुआ चिपकाया गया है।" साभार - संस्कृति सरगम प्रकाशित इण्डिया गैप्स टुडे, DL(N)07/0077/06-08, हिन्दी पाक्षिक, वर्ष 19, अंक प्रथम, 1-15 जनवरी 2007, 25/50 शक्ति नगर, दिल्ली 110 007 प्रेषक - श्री दयराम पोद्दार, राँची 834001, मो 92347-50607

बिना सबूत के तो आप विश्वास ही नहीं करते

चित्रों को देखने में और उनके बारे में केवल सुनने में बहुत बड़ा फर्क होता है। **सुनकर** स्थिति की गंभीरता को आँका नहीं जा सकता। देखने के पश्चात उसकी छाप मन पर गहरी होती है। देखकर जब आप दूसरों को **दिखाते** हैं तब उनको आप पर विश्वास होता है। सुनकर जब आप दूसरों को **सुनाते** हैं तो बात आयी-गई हो जाती है। इन प्रमाणों को देखते समय यह बात **सर्वदा याद रखें** कि वास्तविक तैलचित्र जो लाखों में बिकते हैं वे इतने छोटे नहीं होते - ये तैलचित्र धनवानों के विराट बैठक कक्ष की दीवारों की शोभा बढ़ाते हैं - मेहमान उन्हें देखते हैं एवं कलाकृति की बारीकियों की प्रशंसा करते हैं - **वे बारीकियाँ तैलचित्र में दर्शाये गए पात्रों, उनकी शारीरिक स्थितियों, उनके चेहरे पर उभरते हुए भावों की स्पष्टता पर निर्भर करती हैं जो आपको इन छोटी-छोटी तस्वीरों स्पष्ट न दिखेंगी - इस कारण संभव है कि आपको इन्हें देखकर स्थिति की गम्भीरता का एहसास न हो - एम एफ़ हुसैन ने अपने बनाये तैलचित्रों में आदि शक्ति माँ दुर्गा को अपने वाहन व्याघ्र के साथ सम्भोग करते हुए दिखाया है एवं परम पावन सीता मैया को बालब्रह्मचारी भक्तशिरोमणि हनुमानजी की पूँछ पर बैठ कर उस पूँछ के द्वारा हस्तमैथुन करते हुए दिखाया है। यदि आपके मन में संशय रह जाये तो आपको इन छोटे चित्रों को कम्प्यूटर की सहायता से बहुत बड़ा करना होगा उन बारीकियों की गम्भीरता को समझने के लिए।**

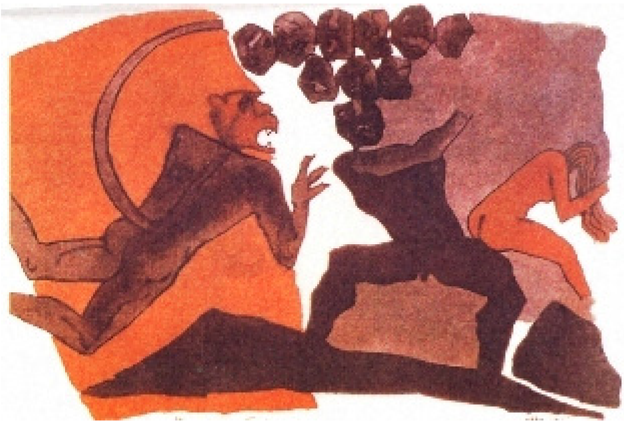

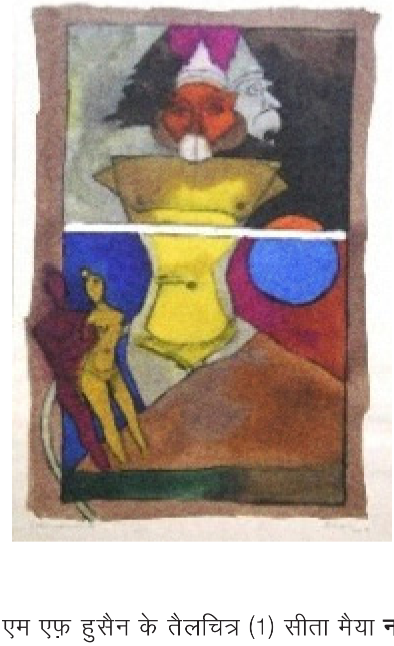

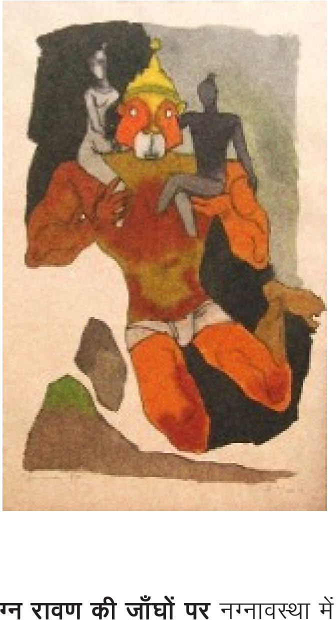

एम एफ़ हुसैन के तैलचित्र (1) सीता मैया **नग्न रावण की जाँघों पर** नग्नावस्था में (2) **हनुमान जी की उपस्थिति में** श्रीराम तथा सीता मैया नग्नावस्था में **संभोगरत** (3) हनुमानजी के काँधों पर बैठे श्रीराम तथा सीता मैया **नग्नावस्था** में (4) अगले पृष्ठ पर श्रीराम, सीता मैया एवं हनुमानजी **तीनों नग्नावस्था में एक साथ** एवं **श्रीराम का सर कटा** हुआ (5) अगले पृष्ठ पर माता लक्ष्मी **नग्नावस्था** में।

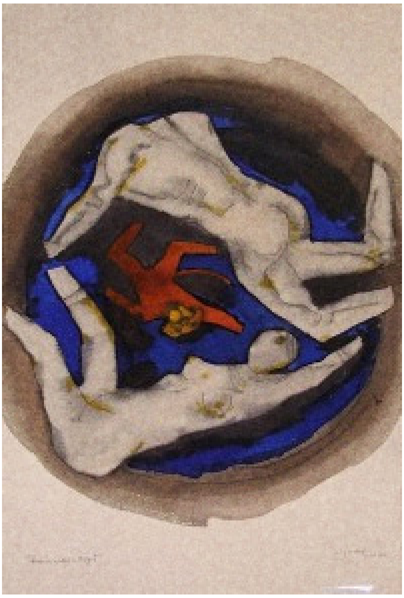

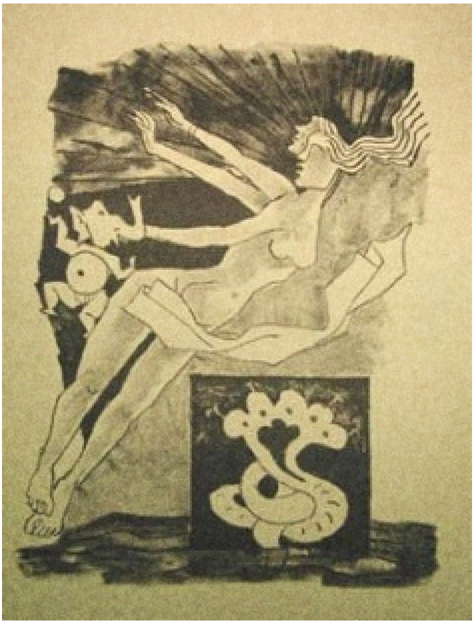

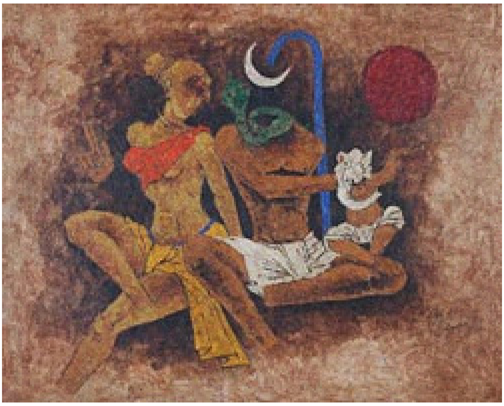

एम एफ़ हुसैन के तैलचित्र (1) माता पार्वती बालक गणेश के साथ **नग्नावस्था** में (2) भगवान **शंकर का सिर कटा** हुआ, माता पार्वती बालक गणेश के साथ (3) अगले पृष्ठ पर माँ सरस्वती **नग्नावस्था** में।

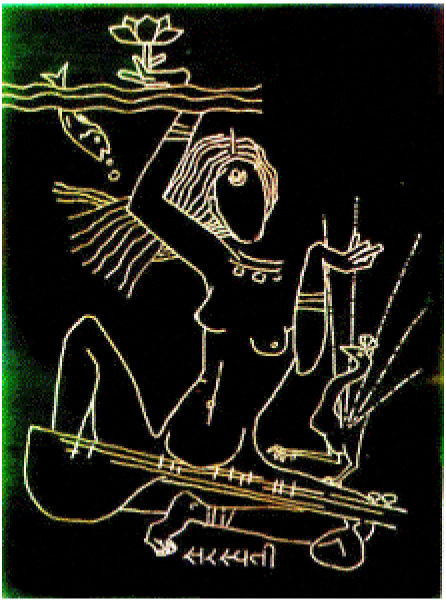

आज के बच्चों के भावी आदर्श

कुछ समय पहले की ही बात है। **महाराष्ट्र के गवर्नर** इसी एम एफ़ हुसैन का सम्मान करने वाले थे उन्हें एक महान कलाकर बताते हुए (इसके विरोध में ईमेल अभियान चलाये गये)। उन्हीं दिनों की बात है जब **महाराष्ट्र सरकार** स्कूल के बच्चों को अपने पाठ्यपुस्तकों के द्वारा यह शिक्षा देने जा रही थी कि एम एफ हुसैन एक महान कलाकार हैं (संदर्भ सनातन प्रभात)। इस प्रकार उस व्यक्ति को न सिर्फ महान ही घोषित किया जा रहा था बल्कि उसे **पाठ्य पुस्तकों के माध्यम से** आधुनिक भारत के एक ऐतिहासिक व्यक्तित्व की मान्यता दी जाने की चेष्टा की जा रही थी। अब जरा सोच कर देखिए। आपके नन्हें-नन्हें बच्चे - जिनका **दिमाग कोरे कागज** की तरह होता है - जब उनके मनो-मस्तिष्क पर यह छाप छोड़ दी जाती कि यह व्यक्ति एक आदर्श पुरुष हुआ करता था, तो क्या आपके वही बच्चे बड़े होकर उसी आदर्श पुरुष के **नक्शे-कदमों पर चलने** की चेष्टा नहीं करते? एक बात और सोच कर देखिए। **आपके वे बच्चे जो आज एक बड़े असत्य की उँगली थामें अपने पैरों पर खड़े होना सीखते, क्या वे बड़े होकर उसी असत्य को एक सत्य का दर्जा देते रहने की हर कोशिश नहीं करते?**

अब कुछ देर बैठ कर सोचें

यदि आज का छोटा-सा आधुनिक समाज, आपके इतने बड़े हिंदूसमाज के माता-स्वरूप दुर्गा को इस प्रकार से चित्रित करने का दुःसाहस कर सकता है, तो कल जब इस समाज की **यही मनोवृत्ति और भी सुदृढ़ होगी** तब वह आपकी अपनी माता, आपकी अपनी बहन, आपकी अपनी पत्नी एवं आपकी अपनी पुत्री को किस रूप में चित्रित करेगा? आज आपकी शक्ति जब कुछ बाकी है तब यदि आप इसका निवारण नहीं कर पाते, तो आने वाले समय के साथ जब आपकी शक्ति क्षीण होती जायेगी एवं आपका रहा-सहा मनोबल टूटता जायेगा, तब आप क्या कर पायेंगे? बेशक आज आप इस समस्या को टालते जायें, **पर क्या समय आपके लिए ठहरेगा?**

अपने-आपसे कुछ प्रश्न पूछें

(1) मकबूल फ़िदा हुसैन की धार्मिक एवं सांस्कृतिक पृष्ठभूमि क्या है; (2) उन सब की धार्मिक एवं सांस्कृतिक पृष्ठभूमि क्या है जो इस राष्ट्र के सबसे बड़े, एवं सबसे महत्वपूर्ण, मस्जिद के संरक्षण में कुछ इसीप्रकार के चित्रों को बेचते हैं; (3) उन सब की धार्मिक एवं सांस्कृतिक पृष्ठभूमि क्या है जो इन मस्जिदों में प्रवेश करते हैं एवं वहाँ से इस प्रकार के चित्रों को खरीदते हैं; (4) उन सब की सोच क्या है और वे इस प्रकार के चित्रों में इतनी रुचि क्यों लेते हैं, और इस प्रक्रिया को उनके अपने धार्मिक संरक्षण में इतना बढ़ावा क्यों दिया जाता है; **(5) उनकी यह सोच कैसे बनी, यह सोच किस हद तक आगे जा सकती है, और जब यह सोच उन हदों को छूने लगेगी, तब उनके अगले कदम आप पर क्या कयामत ढायेंगे?**

हिंदू धर्म गुरुओं / सन्यासियों से मेरी प्रार्थना

मेरी प्रार्थना है हिंदू धर्म गुरुओं से कि चेतायें अपने अनुयायियों को, कि आज समय अपने मोक्ष की चिंता करने का नहीं है बल्कि हमारे धर्म पर होने वाले हर प्रहार का समुचित उत्तर देने का है। धर्म गुरुओं का यह पावन कर्तव्य है आज, कि जगायें अपने अनुयायियों को, और उन्हे कमर कस कर एक अभेद्य दीवार की भाँति खड़ा करें जिसे तोड़ने का दुःसाहस कोई भी न कर सके। आज हिंदुओं की बागडोर सन्यासियों के हाथ में है। जब उन्होंने हमारे समाज में, यह महत्वपूर्ण स्थान, स्वेच्छा से ग्रहण किया है, तो उनका कर्तव्य बनता है, कि वे समाज को आज की आवश्यकता के अनुसार मार्गदर्शन करें। यदि वे अपने अनुयायियों को अपने ही जैसा सन्यासी बनायेंगे तो यह हिंदू समाज के प्रति बहुत बड़ा अन्याय होगा।

ISBN 81-89746-16-2 (2006) तथा ISBN 978-81-89746-64-3 (2007) पर आधारित

लेखक किसी धार्मिक, संस्कृतिक, राजनीतिक, सामाजिक संस्था से जुड़ा हुआ नहीं। सत्य को संगठनों के बंधनों में जकड़ना नहीं चाहता। आगे श्रीनारायण जिस राह पर ले जायेंगे।

जन्म 11 माघ - स्वामी विवेकानन्द, नेताजी सुभाष चन्द्र बोस, कविगुरु रविन्द्र नाथ ठाकुर, बलिदानी खुदिराम बोस की पुण्य भूमि पश्चिम बंगाल की गोद में।

शिक्षा - स्नातक (बी कॉम), सी-ए (चार्टर्ड ऐकाउन्टैन्ट), सी-एस (कम्पनी सेक्रेटरी), एवं कम्प्यूटर सिस्टम ऐनालिस्ट।

जीविकोपार्जन हेतु चार वर्ष मध्य-पूर्व (1980 का दशक), एक वर्ष सुदूर-पूर्व, चार वर्ष पश्चिम (1990 का दशक) तथा पंद्रह वर्ष भारतमाता की गोद में जीवन यापन।

शिकागो, अमरीका में 1898 से प्रकाशित हो रही द मार्क्विस हू'ज़ हू पब्लिकेशन बोर्ड द्वारा 1986 में इस लेखक के जीवन परिचय को हू'ज़ हू इन द वर्ल्ड में सम्मिलित करने का प्रस्ताव - तदनन्तर हू'ज़ हू इन द वर्ल्ड के 1987-88 अंक में प्रकाशित।

मई 2000 - जीविका उपार्जन हेतु कर रहे कार्य से संपूर्ण अवकाश - अध्यात्म से लेखन की ओर प्रवृत्ति। अपनी सामान्य जमापूँजी को ईश्वर की धरोहर मान, उसी से लेखन-प्रकाशन-वितरण के खर्च चलाना। मन से सन्यासी बन चुका था किन्तु धर्म पर हो रहे निरंतर आघातों ने निर्लिप्त न रहने दिया। धर्मक्षेत्र-कुरुक्षेत्र की पावन भूमि पर, सुदर्शन चक्र की भाँति रथ का पहिया उठाये, श्रीकृष्णावतार में भीष्म पितामह से कहे गए ये वाक्य कानों में गूँजते रहे -

"तोड़ता हूँ मैं अपने वचन शस्त्र-सन्यास के उपकरण, धर्मरक्षा के लिए कर रहा हूँ मैं आयुध ग्रहण"।

उसी गूँज की प्रतिध्वनी आपको सुनाई देगी इन पंक्तियों में -

"समर शेष है नहीं पाप का भागी केवल व्याध, जो तटस्थ हैं समय लिखेगा उनके भी अपराध।"

छपी हुई पुस्तक - डाक दर 1 रुपया प्रति 100 ग्राम

मानोज रखित (लेखक तथा प्रकाशक)

8-604 डिस्कवरी, दत्तपाड़ा मार्ग, बोरीवली पूर्व, मुंबई 400 066
दूरभाष 98698 09012 ईमेल maanojrakhit@gmail.com
वेबसाइट maanojrakhit.com

अंतर्राष्ट्रीय मानक पुस्तक क्रमांक

ISBN-10 81-89990-20-9 ISBN-13 978-81-89990-20-6